46-सूरत-अहक़ाफ़

इस मक्की सूरत में '4' रूकू और '35' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

حٰمٓ ۝١ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝٢ مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ
وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝٣ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا
خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝٤ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ
دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝٥ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝٦

आयत नं० 01 से 06

हामीम (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)(01) **यह किताब अल्लाह ज़बरदस्त** (कुदरत वाले और) **हिकमत वाले की तरफ़ से भेजी गई है** (इसलिए इसकी बातों को सोचना समझना चाहिए)(02) **हमने आसमानों और ज़मीन को और उन चीज़ों को जो उनके बीच में हैं** (ख़ास मतलब और) **हिकमत के साथ और ख़ास मुद्दत** (तक) **के लिए पैदा किया है, और जो लोग काफ़िर हैं उन को जिस चीज़ से डराया जाता है** (जैसा कि तौहीद के इनकार पर तुम को क़ियामत में अज़ाब होगा) **वो उससे मुंह फेरते हैं** (और तौहीद को नहीं मानते)(03) **आप** (उन से तौहीद के बारे में) **कहिए कि यह तो बताओ जिन चीज़ों की तुम अल्लाह** (की तौहीद) **को छोड़ कर इबादत करते हो** (उन के इबादत का हक़दार होने की क्या दलील है अगर अक़ली दलील है तो) **मुझ को यह दिखाओ कि उन्होंने कौन सी ज़मीन पैदा की है या उन का आसमानों** (के पैदा करने) **में कुछ हिस्सा** (है और साफ़ बात है कि तुम भी उन को ख़ालिक़ यानी पैदा करने वाला नहीं मानते जो कि इबादत का हक़दार होने की दलील हो सकती है बल्कि मख़लूक़ यानी पैदा किय हुए कहते हो जो कि इबादत के हक़दार नहीं हो सकते, बस अक़ली दलील तो नहीं) **है,** (और अगर तुम्हारे पास

किताबी दलील है तो) **मेरे पास कोई** (सही) **किताब लाओ** (जिसमें शिर्क का हुक्म हो और) **जो इस** (कुरआन) **से पहले की हो** (क्योंकि कुरआन में तो शिर्क को मना किया गया है) **या** (अगर किताब न हो तो) **कोई और** (भरोसेमन्द) **इल्मी बयान** (जो ज़बानी) **सुनते चले आए हों** (और किताब में दर्ज न हो वो लाओ) **अगर तुम** (शिर्क के दावे में) **सच्चे** (हो मतलब यह कि वो दलील ऐतबार की हो किसी नबी की किताब हो या उनका ज़बानी बयान) **हो(04) और** (साफ़ बात है कि ऐसी कोई दलील पेश नहीं कर सकता फिर) **उस आदमी से ज़्यादा कौन गुमराह होगा जो** (दलील से लाचार होने और उसके ख़िलाफ़ दलील होने के बावजूद) **अल्लाह को छोड़ कर ऐसे माबूद को पुकारे जो क़ियामत तक भी उसका कहना न करे और उनको इनके पुकारने** (तक) **की भी ख़बर न हो (05) और** (फिर) **जब** (क़ियामत में) **सब आदमी** (हिसाब के लिए) **जमा किये जाएंगे तो वो** (माबूद) **उन** (इबादत करने वालों) **के दुशमन हो जाएं और उनकी इबादत ही का इनकार कर बैठें** (बस ऐसे माबूदों की इबादत करने से बढ़ कर क्या ग़लती है)**(06)**।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ
قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمْ ؕ
وَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٨ قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَ مَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَ لَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا
يُوْحٰۤى اِلَيَّ وَ مَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٩ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَ كَفَرْتُمْ بِهٖ وَ شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ
بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَ اسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠

आयत नं० 07 से 10

और जब हमारी साफ़-साफ़ आयतें (जो कि मोजिज़ा होने की वजह से पैग़म्बरी की दलील हैं) **इन** (पैग़म्बरी का इनकार करने वाले) **लोगों के सामने पढ़ी जाती हैं तो ये काफ़िर लोग इस सच्ची बात के बारे में जब कि वो उन तक पहुंचती है यह कहते हैं कि यह खुला जादू** (है जब कि इसकी मिसाल नहीं हो सकती और जादू की मिसाल हो सकती) **है(07)** (और इससे बढ़कर और सुनो) **क्या ये लोग यह कहते हैं कि इस आदमी ने** (यानी पैग़म्बर आपने) **इस** (कुरआन) **को** (नऊज़ुबिल्लाह) **अपनी तरफ़ से बना लिया** (है और अल्लाह का बता दिया) **है,** (आगे इस बात का जवाब है कि) **आप कह दीजिए कि अगर मैंने इसको अपनी तरफ़ से बना लिया** (होगा और

अल्लाह का बता दिया) **होगा तो** (अल्लाह तआ़ला लोगों को धोके से बचाने के लिए मुझ को पैग़म्बरी के झूटे दावे पर जल्द ही हलाक कर देगा) **फिर** (उस वक़्त) **तुम** (या और) **लोग मुझ को अल्लाह** (के अज़ाब) **से ज़रा भी बचा सकते** (नहीं मुझ को अज़ाब न होना दलील है इस बात की कि मैं अपने पैग़म्बरी के दावे में झूटा) **नहीं,** (और जब मैं झूटा नहीं तो यह समझ लो कि) **वो ख़ूब जानता है तुम कुरआन** (के बारे) **में जो जो बातें बना रहे हो** (इसलिए तुम को सज़ा होगी)**, मेरे और तुम्हारे बीच** (सच और झूट का फ़ैसला करने के लिए) **वो काफ़ी गवाह** (यानी ख़बर रखने वाला) **है** (इसलिए अगर मैं झूटा हूंगा मुझ को फ़ौरन अज़ाब देगा और अगर तुम झूटे होंगे तो तुम को जल्द या देर से अज़ाब देगा)**, और** (अगर कोई यह समझे कि अगर हम गुनाहगार हैं तो हम पर अज़ाब क्यों नहीं आया तो) **वो बड़ा बख़्शने वाला है** (इसलिए दुनिया में कभी-कभी काफ़िरों पर अज़ाब नहीं भी आता और) **बड़ी रहमत वाला** (है इसलिए दुनिया में मोहलत दी जाती) **है(08)** (आगे पैग़म्बरी के सबूत के लिए कहते हैं कि) **आप कह दीजिए कि मैं कोई अनोखा पैग़म्बर तो नहीं हूं** (कि तुम्हें अचम्भा हो क्योंकि मुझ से पहले बहुत से पैग़म्बर आ चुके हैं जिन की ख़बर तुमने भी बराबर सुनी है) **और** (न मैं ग़ैब की बातों का दावा करता हूं बल्कि सिर्फ़ वो ही बातें जानता हूं जो वही से बता दी गई हैं यहां तक कि) **मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और न** (यह पता कि) **तुम्हारे साथ** (क्या किया जाएगा)**, मैं तो सिर्फ़ उसी** (हुक्म) **पर चलता हूं जो मेरे पास वही के वास्ते से आता है** (और उसी की तबलीग़ भी करता हूं और अगर तुम इस को नहीं मानते तो मेरा कोई नुक़सान नहीं क्योंकि) **मैं तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला हूं(09) आप कह दीजिए कि तुम मुझ को यह बता दो कि अगर यह कुरआन अल्लाह की तरफ़ से हो और** (फिर) **तुम ने इसका इनकार कर दिया और** (किसी दलील से इसका अल्लाह की तरफ़ से होने की तस्दीक़ भी हो जाए जैसे) **बनी इस्राईल** (के आलिमों) **में से कोई** (भरोसेमन्द) **गवाह इस जैसी किताब** (यानी इस किताब के अल्लाह के तरफ़ से होने) **पर गवाही देकर ईमान ले आए और तुम** (बेइल्म होने के बावजूद इस किताब पर ईमान लाने से) **घमन्ड ही में रहो** (तो इस सूरत में तुम से ज़्यादा बेइन्साफ़ कौन होगा)**, बेशक अल्लाह तआ़ला बेइन्साफ़ लोगों को** (उनकी दुशमनी की वजह से) **सीधा रास्ता नहीं दिखाता** (बल्कि सदा गुमराही में रहते हैं और गुमराही का अन्जाम आग है)(10)।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ؕ وَ اِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ اِفْكٌ
قَدِيْمٌ ⑪ وَ مِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّ رَحْمَةً ؕ وَ هٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ

ظَلَمُوْا ۖ وَ بُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢﴾ ۚ

आयत नं० 11 से 12

और ये काफ़िर ईमान वालों (के ईमान लाने) **के बारे में यह कहते हैं कि अगर यह कुरआन** (जिस पर ये लोग ईमान लाए हैं) **कोई अच्छी** (यानी सच्ची) **चीज़ होता तो ये** (कम दर्जे के) **लोग उस की तरफ़ हम से आगे न बढ़ते** (यानी हम लोग अक़्लमन्द हैं और ये कम अक़्ल और सच बात को पहले अक़्लमन्द माना करता है अगर यह हक़ होता तो हम पहले मानते और जब हम ने नहीं माना तो यह हक़ नहीं क्या बेतुकी बातें करते हैं)**, और जब** (दुशमनी व घमन्ड की वजह से) **इन लोगों को कुरआन से हिदायत नसीब नहीं हुई तो** (अपनी दुशमनी और ज़िद की वजह से) **ये ही कहेंगे कि ये वो ही पुराने ज़माने का झूट है(11) और इस** (कुरआन) **से पहले मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की किताब** (आचुकी) **है जो** (मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत के लिए) **राह दिखाने वाली** (थी) **और** (ख़ास कर ईमान वालों के लिए) **रहमत थी, और** (जिस तरह तौरेत में इसकी ख़बर दी गई है) **यह** (उसी तरह की) **एक किताब है जो उस** (की दी हुई ख़बर) **को सच्चा करती है** (और) **अरबी ज़बान में** (है) **ज़ालिमों को डराने के लिए और नेक लोगों को खुशख़बरी देने के लिए** (उतरी है)(12)।

नोटः- हज़रत उमर रज़ि० जब तक मुसलमान नहीं हुए थे और उनकी एक बान्दी मुसलमान हो गई थी ये उसको उसके इस्लाम लाने पर मारते और धमकाते थे कि किसी तरह इस्लाम को छोड़ दे और कुरैशी काफ़िर कहा करते थे कि इस्लाम कोई अच्छी चीज़ होती तो कम दर्जे की औरत इसमें हम से आगे न होती इस पर ये आयतें उतरीं। (मज़हरी)

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٣﴾ ۚ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ وَ وَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّ وَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ
وَ حَمْلُهٗ وَ فِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَ بَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ
نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَ عَلٰى وَالِدَيَّ وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَ اَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَ
اِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَ نَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ اَصْحٰبِ

الْجَنَّةِ ۚ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِىْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿١٦﴾ وَ الَّذِىْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَآ اَتَعِدٰنِنِىْٓ اَنْ اُخْرَجَ وَ قَدْ
خَلَتِ الْقُرُوْنُ مِنْ قَبْلِىْ ۚ وَ هُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ وَيْلَكَ اٰمِنْ ۖ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِىْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا
خٰسِرِيْنَ ﴿١٨﴾ وَ لِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَ لِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾ وَ يَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ۚ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِىْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَ اسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ
بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ بِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ﴿٢٠﴾

आयत नं० 13 से 20

जिन लोगों ने (सच्चे दिल से) **कहा कि हमारा रब अल्लाह है** (यानी पैग़म्बर के बताए तरीक़े पर तौहीद को माना) **फिर** (उस पर) **जमे रहे** (यानी उस को छोड़ा नहीं) **तो** (उसका नतीजा यह है कि) **उन लोगों पर** (आख़रत में) **कोई डर** (की बात होने वाली) **नहीं और न वो** (वहां) **दुखी होंगे(13)** (और) **ये लोग जन्नत वाले हैं जो उसमें सदा-सदा रहेंगे उन नेक कामों के बदले में जो कि वो करते थे** (जिनमें से ईमान लाने और उस पर जमे रहने का ऊपर ज़िक्र है)**(14) और** (जिस तरह हमने अल्लाह के हक़ों को वाजिब किया इसी तरह बन्दों के हक़ों को भी वाजिब किया है इसलिए) **हमने इन्सान को अपने मां बाप के साथ अच्छा बरताव करने का हुक्म दिया है,** (और ख़ास कर मां के साथ और ज़्यादा क्योंकि) **उस की मां ने उस को बड़ी तकलीफ़ के साथ पेट में रक्खा और फिर बड़ी तकलीफ़ के साथ जन्म दिया, और उसको पेट में रखना और उस का दूध छुड़ाना** (अक्सर) **तीस महीने** (में पूरा होता है इतने दिनों तरह-तरह की मुसीबत उठाती है और इन परीशानियों में बाप भी कुछ न कुछ साझी रहता) **है,** (बस इतने दिनों तक उन्हीं के साये में पलता है) **यहां तक कि जब** (परवान चढ़ते हुए) **अपनी जवानी** (की उम्र) **को पहुंच जाता है और** (फिर बालिग़ होने के बाद एक ज़माने में जब) **चालीस साल** (की उम्र) **को पहुंचता है तो** (जो नेक होता है वो) **कहता है कि या रब मेरे मुझ को इसकी तौफ़ीक़ दीजिए कि मैं आप की उन नेमतों का शुक्र किया करूं जो आपने मुझ को और मेरे मां बाप को दी हैं** (अगर मां बाप भी मुसलमान हैं तब तो दीन की नेमत भी वर्ना दुनिया की नेमत तो है ही) **और** (वो यह भी कहता है कि मुझ को इस की भी पाबन्दी नसीब कीजिए कि) **मैं नेक काम किया करूं जिससे आप ख़ुश हों और मेरी औलाद मेरे** (नफ़े के) **लिए नेक बना दीजिए** (दुनिया का नफ़ा

यह कि देख कर आंखें ठन्डी हों और दीनी नफ़ा यह कि सवाब हो, और) **मैं आप के सामने** (अपने गुनाहों से) **तौबा करता हूं और मैं** (आप का) **ताबेदार हूं**(15) **ये वो लोग हैं कि हम उनके नेक कामों को कुबूल कर लेंगे और उन के गुनाहों को मुआफ़ कर देंगे** (तो) **वो जन्नती लोगों में से होंगे,** (और यह सब) **उस सच्चे वादे की वजह से** (हुआ) **जिस का उन से** (दुनिया में) **वादा किया जाता था**(16) **और** (आगे बुरे लोगों के बारे में बयान है कि) **जिसने** (अल्लाह के और बन्दों के दोनों के हक़ों को बर्बाद कर दिया जब कि उसने) **अपने** (मुसलमान) **मां बाप से कहा** (जब कि उस को भी वो इस्लाम की दावत दे रहे हों) **कि अफ़सोस है तुम पर क्या तुम मुझ को यह वादा** (यानी ख़बर) **देते हो कि मैं** (क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा होकर) **क़ब्र से निकाला जाऊंगा हालांकि मुझ से पहले बहुत सी उम्मतें हो चुकीं** (जिन को हर ज़माने में उनके पैग़म्बर ऐसी ख़बर देते चले आए मगर आज तक कोई बात सामने नहीं आई इससे पता चला कि ये सब बातें ही बातें हैं) **और वो दोनो** (घबराकर) **अल्लाह से फ़रियाद कर रहे हैं** (और उससे कह रहे हैं कि) **अफ़सोस है तुझ पर ईमान ले आ** (और क़ियामत को भी सच समझ) **बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तो यह** (इस पर भी) **कहता है कि ये बेसनद बातें पहलों से कही चली आती हैं** (मतलब यह कि ऐसा बदनसीब है कि कुफ़्र और मां बाप से बदसलूकी दोनो ख़ताओं का मुजरिम है)(17) **ये वो लोग हैं कि इनके बारे में भी उन लोगों के साथ अल्लाह का बयान** (यानी अज़ाब का वादा) **पूरा होकर रहा जो इनसे पहले जिन्नात और इन्सान** (काफ़िर) **हो चुके हैं, बेशक ये** (सब) **नुक़सान में रहे**(18) **और** (दोनो गिरोहों में से) **हर एक** (गिरोह) **के लिए उनके** (अलग-अलग) **कामों की वजह से अलग-अलग दर्जे** (किसी को जन्नत के किसी को दोज़ख़ के) **मिलेंगे, और** (अलग-अलग दर्जे इसलिए मिलेंगे) **ताकि अल्लाह तआला सब को उनके कामों का पूरा-पूरा बदला दे और उन पर** (किसी तरह का) **ज़ुल्म नहीं होगा**(19) **और** (उस दिन को याद रक्खो) **जिस दिन काफ़िर लोग आग के सामने लाए जाएंगे,** (और उन से कहा जाएगा कि) **तुम अपने मज़े की चीज़ें अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में पा चुके** (यहां कोई मज़ा तुम को नसीब न होगा) **और उनको ख़ूब बरत चुके** (यहां तक कि उनमें पड़ कर हम को भी भूल गये) **इसलिए आज तुम्हें रूसवाई भरी सज़ा दी जाएगी इस वजह से कि तुम दुनिया में नाहक़ घमन्ड किया करते थे** (घमन्ड से मुराद ऐसा घमन्ड है जो ईमान से रोके रक्खे क्योंकि सदा का अज़ाब उसी के लिए ख़ास है) **और इस वजह से कि तुम कहना नहीं माना करते थे** (इसमें कुफ़्र ज़ुल्म सभी गुनाह आ गये)(20)

हदीसः- एक हदीस में है कि "जो आदमी अल्लाह तआला से थोड़ी रोज़ी लेने पर राज़ी हो जाए तो अल्लाह तआला भी उसके थोड़े अमल पर राज़ी हो जाते हैं"। (मज़हरी)

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि हमल की कम से कम मुद्दत "६" माह और दूध पिलाने की ज़्यादा से ज़्यादा मुद्दत दो साल है।

وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖۤ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا
اللّٰهَ ؕ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۲۱﴾ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ
كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿۲۲﴾ قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖؗ وَ اُبَلِّغُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَ لٰكِنِّیْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا
تَجْهَلُوْنَ ﴿۲۳﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِیَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ
رِیْحٌ فِیْهَا عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۲۴﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَیْءٍۭ بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا یُرٰۤى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی
الْقَوْمَ الْمُجْرِمِیْنَ ﴿۲۵﴾ وَ لَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِیْمَاۤ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِیْهِ وَ جَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّ اَبْصَارًا وَّ اَفْـِٕدَةً ۖؗ فَمَاۤ اَغْنٰی
عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَ لَاۤ اَبْصَارُهُمْ وَ لَاۤ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَیْءٍ اِذْ كَانُوْا یَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا
بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۲۶﴾

आयत नं० 21 से 26

और आप क़ौमे आद के भाई (यानी हूद अलैहिस्सलाम) **का** (इन से) **ज़िक्र कीजिए, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम को अहक़ाफ़** (नाम की जगह) **में** (जहां वो आबाद थे) **इस** (बात) **पर** (अल्लाह के अज़ाब से) **डराया कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत मत करो** (वर्ना तुम पर अज़ाब आजाएगा) **और** (यह ऐसी ज़रूरी और सही बात है कि) **उन** (हूद अलैहिस्सलाम) **से पहले और उनके बाद** (इस बारे में) **बहुत से ख़बरदार करने वाले** (पैग़म्बर अब तक) **हो चुके हैं,** (और हूद अलैहिस्सलाम ने कहा कि) **मुझ को तुम पर एक बड़े** (सख़्त) **दिन के अज़ाब का ख़तरा है** (अगर उस से बचना है तो एक अल्लाह को मान लो)(21) **वो कहने लगे क्या तुम हमारे पास इस इरादे से आए हो कि हम को हमारे माबूदों से फेर दो सो** (हम तो फिरने वाले हैं नहीं बाक़ी) **अगर तुम सच्चे हो तो जिस** (अज़ाब) **का तुम हम से वादा करते हो उस को हम पर ले आओ**(22) **उन्होंने कहा कि पूरा इल्म तो अल्लाह ही को है** (कि अज़ाब कब आएगा)**, और मुझ को तो**

जो पैग़ाम देकर भेजा गया है मैं तुम को वो पहुंचा देता हूं (बस उसमें मुझ से यह भी कहा गया कि तुम पर अज़ाब आएगा मैंने तुम को ख़बर कर दी इससे ज़्यादा न मुझे पता है और न कुछ मेरे बस में है) **लेकिन मैं तुम को देखता हूं कि तुम लोग जहालत की बातें करते** (हो कि एक तो तौहीद को नहीं मानते फिर अपने मुंह से मुसीबत मांगते) **हो**(23) (बस उन्होंने किसी तरह न माना तो) **फिर** (जब अज़ाब आया तो शुरू में एक बादल उठा तो) **उन लोगों ने जब उस बादल को अपनी घाटियों की तरफ़ आता देखा तो कहने लगे यह तो बादल है जो हम पर बरसेगा,** (कहा गया कि) **नहीं** (बरसने वाला बादल नहीं) **बल्कि यह वो ही** (अज़ाब) **है जिस की तुम जल्दी मचाते थे** (कि वो अज़ाब जल्दी लाओ, और उस बादल में) **एक आंधी है जिसमें दर्दनाक अज़ाब है**(24) **वो** (आंधी) **हर चीज़ को** (जिसके हलाक करने का हुक्म होगा) **अपने रब के हुक्म से हलाक कर देगी तो** (वो आंधी इन्सानों और जानवरों को उठा-उठा कर पटक देती थी जिससे) **वो ऐसे** (तबाह) **हो गये कि सिवाए उनके मकानों के और कुछ** (आदमी और जानवर) **न दिखाई देता था, हम** (ऐसे) **मुजरिमों को ऐसे ही सज़ा दिया करते हैं**(25) **और हमने उन को** (यानी क़ौमे आद के लोगों) **को उन बातों की ताक़त दी थी कि तुम को उन बातों की ताक़त नहीं दी और हमने उनको कान और आंख अैर दिल** (सब ही कुछ) **दिये थे, सो चूंकि वो लोग अल्लाह की आयतों का इनकार करते थे इसलिए** (जब उन पर अज़ाब आया है तो) **न उन के कान उन के ज़रा काम आए और न उनकी आंखें और न उनके दिल और जिस** (अज़ाब) **की वो हंसी उड़ाया करते थे उसी ने उन को आघेरा** (यानी न उनकी ताक़त उनको अज़ाब से बचा सकी और न चालाकी बस तुम्हारी तो क्या हैसियत है)(26)।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۭ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾

आयत नं० 27 से 28

और हमने तुम्हारे आस पास की और बस्तियां भी (इस कुफ़्र व शिर्क की वजह से) **बर्बाद की हैं** (जैसे समूद व क़ौमे लूत) **और हमने** (हलाक करने से) **पहले** (उन के समझाने के लिए) **बार-बार अपनी निशानियां** (उनको) **बता दी थीं ताकि वो** (कुफ़्र व शिर्क से) **बाज़ आएं** (मगर बाज़ न आए और हलाक हुए)(27) **सो अल्लाह के सिवा जिन-जिन चीज़ों को उन्होंने अल्लाह तआला**

की नज़दीकी पाने के लिए अपना माबूद बना रक्खा था (कि ये मुसीबत में हमारे काम आएंगे बर्बादी व अज़ाब के वक़्त) **उन्होंने उनकी मदद क्यों न की, बल्कि वो सब उन से ग़ाइब हो गये, और वो** (माबूद और सिफ़ारिशी समझना) **सिर्फ़ उन की घड़ी हुई झूट बात है** (और सच में वो सिफ़ारिशी या माबूद तो थे नहीं)(28)

नोटः- मुल्क शाम और यमन को जाते हुए ये उजड़ी हुई बस्तियां मक्के वालों के रास्ते में पड़ती थीं।

وَ اِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَ لَّوْا اِلٰى
قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿۲۹﴾ قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى
الْحَقِّ وَ اِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۳۰﴾ يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَ اٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُجِرْكُمْ مِّنْ
عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۱﴾ وَ مَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَ لَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۲﴾

आयत नं० 29 से 32

और (इन से उस वक़्त का क़िस्सा ज़िक्र कीजिए) **जब कि हम जिन्नात में से एक गिरोह को आप की तरफ़ ले आए जो** (अख़ीर में यहां पहुंच कर) **क़ुरआन सुनने लगे थे बस जब वो लोग क़ुरआन** (के पढ़े जाने की जगह) **के पास पहुंचे तो** (आपस में) **कहने लगे कि चुप रहो** (और इस कलाम को सुनो) **फिर जब क़ुरआन पढ़ा जा चुका** (यानी जितना उस वक़्त पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ में पढ़ना था पूरा हो चुका) **तो वो लोग** (उस पर ईमान ले आए और) **अपनी क़ौम के पास** (उसकी) **ख़बर पहुंचाने के लिए वापस गये(29)** (और जाकर उन से) **कहने लगे ऐ भाइयों हम एक** (अजीब) **किताब सुन कर आए हैं जो मूसा** (अलैहिस्सलाम) **के बाद उतरी है जो अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करती है जो सच्चे दीन और सीधे रास्ते की तरफ़ राह दिखाती** (है यह तो दीन इस्लाम के हक़ होने की तस्दीक़) **है(30)** (आगे उस के क़ुबूल करने की नसीहत है कि) **ऐ भाइयों तुम अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले का कहना मानो** (मुराद बुलाने वाले से क़ुरआन या नबी आलीशान हैं) **और** (कहना मानना यह है कि) **उस पर ईमान ले आओ** (इसमें इशारा है कि वो ईमान की तरफ़ बुलाते हैं न कि किसी दुनियावी मतलब की तरफ़ बस तुम अगर ऐसा करोगे तो) **अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देगा और तुम को**

दर्दनाक अज़ाब से बचाएगा(31) **और जो आदमी अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले का कहना न मानेगा तो वो ज़मीन** (के किसी हिस्से) **में** (भाग कर अल्लाह को) **हरा नहीं सकता** (यानी इस तरह कि हाथ न आए) **और** (जैसा वो ख़ुद नहीं बच सकता इसी तरह) **अल्लाह के सिवा और कोई उसका हिमायती भी न होगा** (कि वो उसको बचा सके, और) **ऐसे लोग खुली गुमराही में** (पड़े) **हैं** (कि बुलाने वाले के सच्चा होने के सबूतों के बावजूद फिर भी उसका कहना न मानें)(32)।

नोटः- जिन्नात के कुरआन सुनने का क़िस्सा हदीसों में इस तरह आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैग़म्बरी मिलने के वक़्त जब जिन्नात को आसमानी ख़बरें सुनने से रोक दिया गया तो जिन्नात में इस बात का चर्चा हुआ कि पता करना चाहिए ऐसी कौन सी बात दुनिया में हुई है जिसकी वजह से जिन्नात को आसमानी ख़बरों से रोक दिया गया है। जिन्नात की बहुत सी टोलियां इस बात का पता लगाने के लिए दुनिया में फैल गईं एक गिरोह अरब की तरफ़ भी गया और उस जगह पहुंचा जहां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे कुरआन सुन कर कहने लगे कि बस वो नई बात ये ही है जो हमारे और आसमानी ख़बरों के बीच रूकावट बनी है। बस वो ईमान ले आए और दूसरों को भी नसीहत की । हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस क़िस्से की बाद में ख़बर हुई।

اَوَ لَمۡ يَرَوۡا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَلَمۡ يَعۡىَ بِخَلۡقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنۡ يُّحۡیِۦَ الۡمَوۡتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ
عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۳۳﴾ وَيَوۡمَ يُعۡرَضُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيۡسَ هٰذَا بِالۡحَـقِّ ؕ قَالُوۡا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ
فَذُوۡقُوا الۡعَذَابَ بِمَا كُنۡتُمۡ تَكۡفُرُوۡنَ ﴿۳۴﴾ فَاصۡبِرۡ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الۡعَزۡمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسۡتَعۡجِلْ لَّهُمۡ ؕ
كَاَنَّهُمۡ يَوۡمَ يَرَوۡنَ مَا يُوۡعَدُوۡنَ ۙ لَمۡ يَلۡبَثُوۡۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنۡ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلۡ يُهۡلَكُ اِلَّا الۡقَوۡمُ
الۡفٰسِقُوۡنَ ﴿۳۵﴾

आयत नं० 33 से 35

क्या उन लोगों ने यह न जाना कि जिस अल्लाह ने सारे आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने में ज़रा नहीं थका वो इस पर (तो और भी) **कुदरत रखता है कि मुर्दों को** (क़ियामत में) **ज़िन्दा कर दे,** (और उसे इस पर कुदरत) **क्यों न हो बेशक वो** (तो) **हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है**(33) **और जिस दिन** (क़ियामत आएगी और) **काफ़िर**

लोग दोज़ख़ के सामने लाए जाएंगे, (और उनसे पूछा जाएगा कि) **क्या यह दोज़ख़ सच नहीं है** (जैसा कि दुनिया में इसका इनकार किया करते थे)**, वो कहेंगे कि हम को अपने रब की क़सम ज़रूर सच है, कहा जाएगा** (अच्छा) **अपने कुफ़्र के बदले में** (जिसमें दोज़ख़ का इनकार भी आगया) **उस** (दोज़ख़) **का अज़ाब चक्खो**(34) (जब उन से कुफ़्र का बदला लिया जाना मालूम हो गया) **तो** (ऐ पैग़म्बर) **आप** (वैसा ही) **सब्र कीजिए जैसा और हिम्मत वाले पैग़म्बरों ने सब्र किया था और उन लोगों के लिए** (अज़ाब की) **जल्दी न कीजिए** (जिसको आप मुसलमानों की तसल्ली के लिए चाहते थे)**, जिस दिन ये लोग उस चीज़ को** (यानी अज़ाब को) **देखेंगे जिस का उनसे वादा किया जाता है तो** (उस वक़्त अज़ाब की सख़्ती से दुनिया की लम्बी उम्र छोटी लगेगी और ऐसा लगेगा कि) **जैसे ये लोग** (दुनिया में) **दिन भर में एक घड़ी रहे हैं,** (आगे काफ़िरों को कहा गया कि) **यह** (अल्लाह की तरफ़ से बात साबित करने के लिए) **पहुंचा देना है** (जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से हो चुका) **सो** (इसके बाद) **वो ही बर्बाद होंगे जो कहना न मानेंगे** (क्योंकि तबलीग़ के बाद कोई मजबूरी न रही और पैग़म्बर का इसमें कोई नुक़सान नहीं)(35)

47-सूरत-मुहम्मद

इस मदनी सूरत में '4' रूकू और '38' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا وَ صَدُّوۡا عَنۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ اَضَلَّ اَعۡمَالَہُمۡ ① وَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ اٰمَنُوۡا بِمَا نُزِّلَ عَلٰی
مُحَمَّدٍ وَّ ہُوَ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّہِمۡ ۙ کَفَّرَ عَنۡہُمۡ سَیِّاٰتِہِمۡ وَ اَصۡلَحَ بَالَہُمۡ ② ذٰلِکَ بِاَنَّ الَّذِیۡنَ کَفَرُوا اتَّبَعُوا
الۡبَاطِلَ وَ اَنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الۡحَقَّ مِنۡ رَّبِّہِمۡ ؕ کَذٰلِکَ یَضۡرِبُ اللّٰہُ لِلنَّاسِ اَمۡثَالَہُمۡ ③

आयत नं० 01 से 03

जो लोग (खुद भी) **काफ़िर हुए और** (दूसरों को भी) **अल्लाह के रास्ते से रोका** (जैसा कि काफ़िरों के सरदारों की आदत थी कि जान माल से हर तरह की कोशिश इस्लाम का रास्ता रोकने में करते थे सो) **अल्लाह ने उनके किये काम बेकार कर दिये** (यानी जिन कामों को वो नेक समझ रहे हैं वो ईमान न होने की वजह से कुबूल नहीं बल्कि उनमें से कुछ और उल्टे गुनाह हैं जैसे अल्लाह के रास्ते पर चलने से रोकने में ख़र्च करना)**(01) और** (इसके उलट) **जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये और** (उनके ईमान की हालत यह है कि) **वो उस सब पर ईमान लाए जो मुहम्मद** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर उतारा गया है और वो** (जो उतारा गया है वो) **उनके रब के पास से** (आया हुआ) **सच्चा दीन है** (जिसका मानना ज़रूरी है तो) **अल्लाह तआ़ला उनके गुनाह उन पर से उतारेगा** (यानी मुआफ़ कर देगा) **और** (दोनों जहान में) **उनकी हालत ठीक रक्खेगा** (दुनिया में तो इस तरह कि उन को नेक कामों की तौफ़ीक़ बढ़ती जाएगी और आख़रत में इस तरह कि उनको अज़ाब से छुटकारा और जन्नत में दाख़िला मिलेगा)**(02) ये** (मोमिनों की खुशहाली और काफ़िरों की बदहाली) **इस वजह से है कि काफ़िर तो ग़लत रास्ते पर चले और ईमान वाले सही रास्ते पर चले जो उनके रब की तरफ़ से** (आया है इसलिए ये कामयाब हुए और वो नाकाम क्योंकि सही रास्ते का अन्जाम कामयाबी और ग़लत रास्ते का नाकामी) **है,** (और जैसे यह हालत बयान की गई) **अल्लाह तआ़ला इसी तरह लोगों के** (नफ़े व हिदायत के) **लिए उन** (लोगों) **के हालात**

बयान करता है (ताकि शौक़ दिला कर और डर सुनाकर दोनों तरीक़ों से हिदायत की जाए)(03)।

नोटः- यह सूरत "मुहम्मद" हिजरत के फ़ौरन बाद उतरी है जबकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमानों को मक्के में बहुत सताया गया और हिजरत करके मदीना जाने का हुक्म हुआ और फिर ज़ालिमों से जंग करने की यानी जिहाद की इजाज़त दी गई।

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَ اِمَّا فِدَآءً
حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ۛۚ ذٰلِكَ ۛؕ وَ لَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَ لٰكِنْ لِّيَبْلُوَاۡ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ؕ وَ الَّذِيْنَ
قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٤ سَيَهْدِيْهِمْ وَ يُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝٥ وَ يُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا
لَهُمْ ۝٦ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَ يُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝٧ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَ
اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٨ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝٩ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَ لِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ۝١٠ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَ اَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝١١ ع

आयत नं० 04 से 11

(इस आयत में जिहाद के हुक्मों का ज़िक्र है) **सो जब तुम्हारा** (दुशमन) **काफ़िरों से मुक़ाबिला हो जाए तो उनकी गर्दनें मारो, यहां तक कि जब तुम उनका ख़ूब ख़ून बहा चुको** (जिस की हद यह है कि दुशमनों का ज़ोर टूट जाए और जंग बन्द करने से मुसलमानों के नुक़सान या काफ़िरों के हावी होने का ख़तरा न रहे) **तो** (उस वक़्त दुशमनों को क़ैद करके) **ख़ूब मज़बूत बान्ध लो फिर उसके बाद** (चाहे) **बिना फ़िदया लिये** (अहसान करके) **छोड़ देना और या फ़िदया** (यानी जुर्माना) **लेकर छोड़ देना** (और यह क़ैद और क़त्ल का हुक्म उस वक़्त तक है) **जब तक कि लड़ने वाले** (दुशमन) **अपने हथियार न रख दें** (यानी जब जीत हो जाए या समझौता हो जाए तो फिर न क़त्ल जाइज़ है न क़ैद) **यह हुक्म** (जिहाद का जो बताया गया इसी तरह) **पूरा करना, और** (यह जिहाद का तरीक़ा ख़ास हिकमतों की वजह से तय किया गया है वर्ना) **अगर अल्लाह तआ़ला चाहता तो उन से** (ख़ुद ही आसमानी और ज़मीनी अज़ाब भेज कर) **बदला ले लेता** (जैसे पहली उम्मतों में इसी

तरह बदला लिया किसी पर पत्थर बरसे किसी पर हवा का तूफ़ान आया किसी को डुबोया गया अगर ऐसा होता तो तुम को जिहाद न करना पड़ता) **लेकिन** (तुम को जिहाद करने का हुक्म इसलिए दिया) **ताकि तुम्हें एक दूसरे के वास्ते से आज़माए** (मुसलमानों का इम्तिहान यह कि कौन अल्लाह के हुक्म पर जान देने को तैयार है और काफ़िरों का इम्तिहान यह कि जंग की तकलीफ़ से सबक़ लेकर कौन सच्चा दीन क़ुबूल करता है)**, और** (जिहाद में मारा जाना भी नाकामी नहीं क्योंकि) **जो लोग अल्लाह की राह** (यानी जिहाद) **में मारे जाते हैं अल्लाह तआ़ला उनके** (नेक) **कामों को** (जिन में यह जिहाद भी दाख़िल है) **बर्बाद न** (करेगा बल्कि आख़रत में उसका सवाब अता) **करेगा(04)** (और) **अल्लाह तआ़ला उनको मन्ज़िल पर पहुंचा देगा और उनकी हालत** (क़ब्र, हश्र और पुलसिरात और आख़रत की सब जगहों में) **ठीक रखेगा** (कहीं कोई ख़राबी और नुक़सान उन को न पहुंचेगा)**(05) और** (मन्ज़िल पर पहुंचने का बयान यह है कि) **उनको जन्नत में दाख़िल करेगा जिस की उनको पहचान करा देगा** (कि हर जन्नती अपने-अपने मकान में बिना किसी तलाश व पूछताछ के आसानी से जा पहुंचेगा इससे साबित हुआ कि जिहाद में दिखाई देने वाली नाकामी यानी अपना क़त्ल हो जाना भी बड़ी कामयाबी है)**(06) ऐ ईमान वालो अगर तुम अल्लाह** (के दीन) **की मदद करोगे तो वो तुम्हारी मदद करेगा** (जिसका नतीजा दुनिया में भी दुशमनों पर जीत चाहे शुरू में ही या कुछ वक़्त के बाद) **और** (इसी तरह दुशमनों के मुक़ाबिले में) **तुम्हारे पांव जमा देगा(07) और जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए** (दोनों जहान में नुक़सान है कि दुनिया में जब कि वो मोमिनों से मुक़ाबिला करें) **तबाही** (और हार) **है और** (आख़रत में) **उनके** (भले) **कामों को बर्बाद कर** (देगा कोई सवाब न) **देगा(08)** (और काफ़िरों का) **यह** (नुक़सान और बर्बादी) **इस वजह से हुई कि उन्होंने अल्लाह के उतारे हुए हुक्मों को नापसन्द किया** (अक़ीदे से भी और अमल से भी) **सो अल्लाह ने उनके कामों को** (कुफ़्र की वजह से) **बर्बाद कर दिया(09)** (और ये लोग अल्लाह के अज़ाब से नहीं डरते) **क्या ये लोग मुल्क में चले फिरे नहीं और उन्होंने देखा नहीं कि जो लोग उन से पहले हो चुके हैं उन का अन्जाम कैसा हुआ, कि अल्लाह तआ़ला ने उन पर कैसी तबाही डाली** (जो उनके उजड़े हुए महलों व मकानों से नज़र आती है)**, और** (इनको भी इससे बेफ़िक्र न होना चाहिए कि अपने कुफ़्र से बाज़ न आए तो) **इन काफ़िरों के लिए इसी क़िस्म की बातें होने वाली हैं(10) यह** (मुसलमानों की कामयाबी और काफ़िरों की तबाही) **इस वजह से है कि अल्लाह तआ़ला मुसलमानों का रखवाला है और काफ़िरों का कोई** (ऐसा) **रखवाला नहीं** (है कि अल्लाह के मुक़ाबिले में उनके काम बना सके इसलिए वो दोनो जहान में नाकाम रहते हैं और मुसलमानों को अगर

कभी दुनिया में वक़्ती नाकामी भी हो जाए तो अन्जाम कार कामयाबी होगी और आख़रत की कामयाबी तो यक़ीनी है ही इसलिए मुसलमान सदा कामयाब और काफ़िर नाकाम रहता) **है**(11)।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَ
يَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ﴿١٢﴾ وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي
أَخْرَجَتْكَ ۚ أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾ أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّهِ كَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ وَاتَّبَعُوا
أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ مَاءٍ غَيْرِ آسِنٍ ۚ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ
طَعْمُهُ ۚ وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ۚ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَ
مَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ﴿١٥﴾

आयत नं० 12 से 15

बेशक अल्लाह तआला उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे से नहरें बहती होंगी, और जो लोग काफ़िर हैं वो** (दुनिया में) **ऐश कर रहे हैं और** (आख़रत से बेफ़िक्र होकर) **इस तरह खाते** (पीते) **हैं जिस तरह चौपाए खाते हैं** (कि वो नहीं सोचते कि हम को क्यों खिलाया पिलाया जाता है और हमारे ज़िम्मे उसका क्या हक़ वाजिब है) **और जहन्नम उन लोगों का** (आख़री) **ठिकाना है**(12) **और** (आप के मुख़ालिफ़ों को दुनिया की ऐश पर धोका न खाना चाहिए क्योंकि) **बहुत सी बस्तियां ऐसी थीं जो ताक़त में आप की इस बस्ती से बढ़ी हुई थीं जिसके रहने वालों ने आप को घर से बेघर कर दिया कि हमने उन को** (अज़ाब से) **हलाक कर दिया सो उनका कोई मददगार न हुआ** (तो ये बेचारे क्या चीज़ हैं इनको घमन्ड न करना चाहिए क्योंकि जब अल्लाह तआला चाहें उनका सफ़ाया कर सकते हैं और आप उनकी कुछ दिनों की ऐश से दुखी न हों क्योंकि अल्लाह तआला अपने तय वक़्त पर उनको भी सज़ा देने वाले हैं)(13) **तो जो लोग अपने रब के साफ़ रास्ते पर हों क्या वो उन आदमियों की तरह हो सकते हैं जिनके बुरे काम उनको भले मालूम होते हैं और जो अपनी चाहतों के पीछे चलते** (हैं यानी जब दोनों के काम अलग-अलग हैं तो अन्जाम भी अलग होना ज़रूरी है हक़ पर चलने वाले सवाब के और ग़लत रास्ते पर चलने वाले अज़ाब के हक़दार) **हैं**(14)

(जिस का बयान यह है कि) **परहेज़गारों से जिस जन्नत का वादा किया जाता है उसका हाल यह है, कि उसमें बहुत सी नहरें तो ऐसे पानी की हैं जिन में ज़रा बदलाव नहीं होगा** (न बू में न रंग में न मज़े में)**, और बहुत सी नहरें दूध की हैं जिसका ज़ाइक़ा नहीं बदलेगा और बहुत सी नहरें शराब की जो पीने वालों को मज़ेदार मालूम होगी, और बहुत सी नहरें हैं शहद की जो** (मैल कुचैल से) **बिल्कुल साफ़ होगा, और उनके लिए वहां हर क़िस्म के फल होंगे और** (उसमें दाख़िल होने से पहले) **उनके रब की तरफ़ से** (गुनाहों की) **बख़्शिश होगी, क्या ऐसे लोग उन जैसे हो सकते हैं जो सदा दोज़ख़ में रहेंगे और गर्म** (खौलता हुआ) **पानी उनको पीने को दिया जाएगा तो वो उनकी आन्तों के टुकड़े-टुकड़े कर देगा**(15)

नोटः- जन्नत की चीज़ों को दुनिया की चीज़ों से मिलान करके नहीं सोचा जा सकता वहां की हर चीज़ का मज़ा व नफ़ा कुछ और ही होगा जिस की दुनिया में कोई मिसाल नहीं । वहां की शराब में न नशा होगा न बदबू न कड़वाहट न कोई नुक़सान।

وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۟ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَ اتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٦﴾ وَ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّ اٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾
فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٨﴾
فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَ
مَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾ ع

आयत नं० 16 से 19

और (ऐ पैग़म्बर) **कुछ आदमी** (यानी मुनाफ़िक़ लोग) **ऐसे हैं कि वो आप की** (नसीहतों की) **तरफ़ कान लगा**(कर सुन)**ते हैं** (लेकिन दिल से बिल्कुल ध्यान नहीं करते) **यहां तक कि जब वो लोग आप के पास से** (उठ कर मजलिस से) **बाहर जाते हैं तो दूसरे** (सहाबा) **इल्म वालों से कहते हैं कि हज़रत ने अभी** (जब हम मजलिस में थे) **क्या बात कही थी** (उन का यह कहना भी हंसी उड़ाना ही है यानी यह कहना चाहते हैं कि हम आप की बातों को ध्यान से नहीं सुनते) **ये वो लोग है कि अल्लाह तआला ने उनके दिलों पर बन्द लगा दिया है** (हिदायत से दूर हो गये)

और अपनी मन चाही बातों पर चलते हैं(16) **और** (उन्हीं की क़ौम में से) **जो लोग राह पर हैं** (यानी मुसलमान हो चुके हैं) **अल्लाह तआ़ला उनको** (हुक्मों के सुनने के वक़्त) **और ज़्यादा हिदायत कर देता है** (कि वो उन नये हुक्मों पर भी ईमान लाते हैं) **और उनको परहेज़गारी की तौफ़ीक़ देदेता है**(17) **सो** (ये मुनाफ़िक़ लोग जो कुरआन सुन कर भी असर नहीं लेते ऐसा लगता है कि) **ये लोग बस क़ियामत का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि वो उन पर अचानक आजाए** (यानी अब नहीं समझते तो क्या क़ियामत में समझेंगे) **सो** (याद रक्खो कि क़ियामत भी नज़दीक है जैसा कि) **उसकी** (बहुत सी) **निशानियां तो आ चुकी हैं** (जैसे ख़ुद आख़री नबी का आना चान्द के टुकड़े होने का मोजिज़ा और बहुत सी) **तो जब क़ियामत उनके सामने आ ही जाएगी उस वक़्त उन को समझना कहां नसीब** (होगा यानी उसका कोई नफ़ा नहीं) **होगा**(18) **तो** (जब आप अल्लाह तआ़ला के ताबेदार बन्दों और बाग़ियों दोनो का हाल व अन्जाम सुन चुके तो ऐ पैग़म्बर) **आप इसका** (पूरी तरह) **यक़ीन रखिए कि सिवाए अल्लाह के और कोई इबादत के क़ाबिल नहीं** (यानी दीन के सभी हुक्मों की पाबन्दी रखिए) **और** (अगर कभी कोई ख़ता हो जाए जो आप की शान से गुनाह की बात तो नहीं हो सकती फिर भी) **आप अपनी ख़ता की मुआफ़ी मांगते रहिए और सब मुसलमान मर्दों और सब मुसलमान औरतों के लिए भी** (बख़्शिश की दुआ मांगते रहिए), **और** (यह भी याद रहे कि) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे चलने फिरने और रहने सहने की** (यानी सब बातों की) **ख़बर रखता है**(19)

नोटः- एक हदीस में है कि ''ला इलाहा इल्लल्लाह और इस्तिग़फ़ार की कसरत किया करो क्योंकि इबलीस कहता है कि मैंने लोगों को गुनाहों में डाल कर हलाक किया तो उन्होंने मुझे कलमाए लाइलाहा इल्लल्लाह कह कर हलाक किया जब मैंने यह देखा तो मैंने उनको ऐसी ग़लत बातों के पीछे लगा दिया जिन को वो नेकी समझकर करते हैं जैसे आम बिदअतों का ये ही हाल है उससे उनको तौबा की भी तौफ़ीक़ नहीं होती। (मआ़रिफ़ुल कुरआन)

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ
قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۫ فَاِذَا
عَزَمَ الْاَمْرُ ۫ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَ

تُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَ اَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ
عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ؕ
وَ اَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ
اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَ اَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ
اَسْخَطَ اللّٰهَ وَ كَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ ع اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ
اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَ لَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ؕ وَ لَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ
اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَ الصّٰبِرِيْنَ ۙ وَ نَبْلُوَا۟ اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾

आयत नं० 20 से 31

और ईमान वाले कहते रहते हैं कि कोई (नई) **सूरत क्यों नहीं उतरी** (अगर उतर जाए तो उस पर भी ईमान लाकर सवाब पाएं) **तो जिस वक़्त कोई साफ़-साफ़** (हुक्मों वाली) **सूरत उतरती है और** (अगर) **उसमें जिहाद का भी** (साफ़-साफ़) **ज़िक्र होता है तो जिन लोगों के दिलों में** (निफ़ाक़ की) **बीमारी है आप उन लोगों को देखते हैं कि वो आप की तरफ़ इस तरह** (सहमे हुए) **देखते हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छाई हो** (इस तरह देखने की वजह डर और बुज़दिली है कि अब अपने ईमान के दावे को निभाने के लिए जिहाद में जाना पड़ेगा और मुसीबत आई), **सो** (वो जो इस तरह अल्लाह के हुक्म से जी चुराते हैं तो असलीयत यह है कि) **उनकी जल्दी ही कमबख़्ती आने वाली** (है चाहे दुनिया में भी किसी मुसीबत में गरिफ़्तार हों वर्ना मौत के बाद तो ज़रूरी ही) **है(20)** (और यूं तो ताबेदारी और चापलूसी की बहुत सी बातें बनाते हैं मगर) **उनकी ताबेदारी और बातचीत** (की असलीयत) **मालूम है** (जो जिहाद का हुक्म आने के बाद सब पर खुल गई) **फिर** (जिहाद का हुक्म आने के बाद) **जब सारा काम** (और लड़ाई का सामान) **तैयार ही हो जाता है तो** (उस वक़्त भी) **अगर ये लोग** (ईमान के दावे में) **अल्लाह से सच्चे रहते** (यानी ईमान के दावों के तक़ाज़ों को पूरा करते हुए सच्चे दिल से जिहाद करते) **तो उनके लिए बहुत अच्छा होता** (यानी शुरू में अगर मुनाफ़िक़ थे तो अख़ीर ही में तौबा कर लेते तब भी ईमान क़ुबूल हो जाता)**(21) सो** (जिहाद से बचने में एक दुनिया का नुक़सान भी है कि) **अगर तुम** (और इसी तरह सब जिहाद से) **अलग रहो तो तुम से क्या उम्मीद रक्खी जाए कि तुम** (सभी लोग) **दुनिया में फ़साद मचा**

दो और आपस में नज़दीकी रिशते तोड़ (दो यानी जिहाद से बड़ा फ़ाइदा इन्साफ़ क़ाइम होना है वर्ना फ़सादी लोग छा जाएं इन्साफ़ ख़त्म हो जाए अगर तुम इसको छोड़) **दो**(22) (आगे मुनाफ़िक़ के बारे में है कि) **ये वो लोग हैं जिन को अल्लाह ने अपनी रहमत से दूर कर दिया** (इसलिए उसके हुक्मों पर चलना नसीब न हुआ) **फिर** (रहमत से दूर करने का यह असर हुआ कि) **उनको** (अल्लाह के हुक्मों को सुनने से) **बहरा कर दिया और** (सच्चे दीन की राह देखने से) **उन** (के दिल) **की आंखों को अन्धा कर दिया**(23) (और क़ुरआन में इन हुक्मों की दलीलें मौजूद हैं) **तो क्या ये लोग क़ुरआन** (के हुक्मों के बारे) **में सोचते नहीं** (इसलिए इन की समझ में नहीं आता) **या** (सोचते तो हैं मगर) **दिलों पर ताले लग रहे हैं** (यानी दिल ऐसा सख़्त हो गया कि अच्छे बुरे की हिस नहीं रही(24) **जो लोग** (सच्चे दीन से) **पीठ फेर कर हट गये बावजूद इसके कि सीधा रास्ता उनको** (दलीलों से) **साफ़ मालूम हो गया** (तो) **शैतान ने उन को बहका दिया है, और उन को दूर-दूर की उम्मीदें दिलाईं** (कि ईमान लाने से फ़लां-फ़लां फ़ाइदे जाते रहेंगे)(25) **यह सब इस वजह से हुआ कि इन लोगों ने ऐसे लोगों से जो कि अल्लाह के उतारे हुए हुक्मों को** (हसद की वजह से) **नापसन्द करते हैं** (यानी यहूदियों के सरदार जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हसद करते थे और सच्चाइ जान लेने के बावजूद नहीं मानते थे तो उनसे मुनाफ़िक़ों ने) **यह कहा कुछ बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे** (यानी दिल से इस्लाम को न मानेंगे मगर दिखावे में मानते रहेंगे) **और** (भले ही इस क़िस्म की बातें ये मुनाफ़िक़ लोग छुप कर करते हैं मगर) **अल्लाह तआ़ला उनकी छुप कर बातें करने को** (ख़ूब) **जानता** (है और कुछ बातों की वही से आप को ख़बर कर देता) **है**(26) (और ये जो ऐसी हरकतें कर रहे हैं) **तो** (उस वक़्त) **क्या हाल होगा जब कि फ़रिशते उन की जान** (इस तरह) **निकालते होंगे कि उनके चेहरों पर और पीठों पर मारते जाते होंगे**(27) (और) **यह** (सज़ा) **इस वजह से** (होगी) **कि ये उस तरीक़े पर चले जिससे अल्लाह नाराज़ है और जिन बातों से वो राज़ी है उनसे नफ़रत किया करते थे इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उनके सब** (भले) **काम** (शुरू ही से) **बर्बाद कर दिये** (बस इस सज़ा के हक़दार हो गये)(28) **जिन लोगों के दिलों में** (निफ़ाक़ की) **बीमारी है** (और वो उस को छुपाने की कोशिश करते हैं) **क्या ये लोग यह समझते हैं कि अल्लाह तआ़ला कभी उन की दिली दुशमनी को** (लोगों पर) **न खोलेगा**(29) **और हम** (तो) **अगर चाहते तो आप को उन का पूरा पता बता देते तो आप उनको उन के हुलिये से पहचान लेते, और** (चाहे हमने किसी वजह से नहीं बताया मगर) **आप उनको बात करने के ढंग से अब भी ज़रूर पहचान लेंगे, और अल्लाह तआ़ला तुम**

सब के किये कामों को जानता है (बस मुसलमानों को उन की सच्चाई पर इनआम और मुनाफ़िक़ों को उनके झूट और धोके पर सज़ा देगा)(30) **और हम** (जिहाद जैसे सख़्त हुक्म देकर) **ज़रूर तुम सब को आज़माएंगे ताकि हम** (खुले तौर पर भी) **उन लोगों को मालूम** (और अलग) **करलें जो तुम में जिहाद करने वाले हैं और जो** (जिहाद में) **जमे रहने वाले हैं और ताकि तुम्हारी हालतों की भी जांच करलें**(31)।

नोटः- हज़रत सूबान की हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो आदमी यह चाहता हो कि उसकी उम्र ज़्यादा हो और रोज़ी में बरकत हो उसको चाहिए कि रिशतेदारों के साथ अच्छा सलूक (व हमदर्दी) करे। (तिरमिज़ी)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾ إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ إِنْ يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخَلُ وَمَنْ يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَفْسِهِ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

आयत नं० 32 से 38

बेशक जो लोग काफ़िर हुए और उन्होंने (दूसरों को भी) **अल्लाह के रास्ते** (यानी सच्चे दीन) **से रोका और रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **की मुख़ालफ़त की बावजूद इसके कि उन को** (दीन का) **रास्ता** (दलीलों से) **नज़र आ चुका था ये लोग अल्लाह** (के दीन) **को कुछ नुक़सान न पहुंचा सकेंगे** (बल्कि यह दीन हर हाल में पूरा होकर रहेगा और ऐसा ही हुआ), **और अल्लाह तआ़ला उन की कोशिशों को** (जो सच्चे दीन को मिटाने के लिए कर रहे हैं) **मिटा देगा**(32)

ऐ ईमान वालो अल्लाह का कहना मानो और (चूंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह ही का हुक्म बताते हैं इसलिए) **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **का** (भी) **कहना मानो और** (काफ़िरों की तरह अल्लाह व रसूल की मुख़ालफ़त करके) **अपने किये कामों को बर्बाद मत करो**(33) **बेशक जो लोग काफ़िर हुए और उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका फिर वो काफ़िर रह कर मर** (भी) **गये तो अल्लाह तआ़ला उन को कभी न बख़्शेगा**(34) (और जब मालूम हो गया कि मुसलमान अल्लाह के प्यारे हैं और काफ़िरों से नफ़रत है) **तो** (ऐ मुसलमानो) **तुम** (काफ़िरों के मुक़ाबिले में) **हिम्मत न हारो और** (हिम्मत हार कर उन को) **सुलह की तरफ़ न बुलाओ और तुम ही कामयाब रहोगे** (और वो नाकाम क्योंकि तुम प्यारे हो और उन से नफ़रत है) **और अल्लाह तुम्हारे साथ है** (यह तो तुम को दुनिया की कामयाबी हुई) **और** (आख़रत में यह कामयाबी होगी कि अल्लाह तआ़ला) **तुम्हारे नेक कामों** (के सवाब) **में हरगिज़ कमी न करेगा**(35) **यह दुनिया की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ एक खेल तमाशा है** (अगर इसमें जान और माल को अपने फ़ाइदे के लिए बचाना चाहे तो फ़ाइदा ही कितने दिन का है) **और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गार रहो तो** (तुम को अपने पास से नफ़ा पहुंचाएगा इस तरह कि) **तुम को तुम्हारे बदले देगा और** (तुम से कोई नफ़ा न चाहेगा और) **तुम से तुम्हारे माल** (तक भी अपने नफ़े के लिए) **नहीं** (मांगेगा और न ही तुम्हारे जान माल ख़र्च करने से अल्लाह का कोई नफ़ा हो सकता है जब तुम से ऐसी चीज़ नहीं मांगता जिसका देना आसान है तो जान जिसका देना मुश्किल है वो तो क्यों) **मांगेगा**(36) (और) **अगर** (आज़माने के लिए) **तुम से तुम्हारे माल मांगे फिर सब कुछ मांगले तो तुम** (में से बहुत से) **कन्जूसी करने लगो** (यानी देना पसन्द न करो) **और** (उस वक़्त) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दिलों की नागवारी खोल दे** (कि देने से इनकार कर दो)(37) **हां तुम लोग ऐसे हो कि तुम को अल्लाह की राह में** (जिस का नफ़ा तुम्हारे लिए यक़ीनी है थोड़ा सा हिस्सा माल का) **ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है** (और बाक़ी सारा तुम्हारे क़ब्ज़े में छोड़ दिया जाता है) **तो** (उस पर भी) **कुछ तुम में से वो हैं जो कन्जूसी करते हैं, और जो आदमी** (ऐसी जगह ख़र्च करने से) **कन्जूसी करता है तो वो** (असल में) **ख़ुद अपने** (ही नफ़े) **से कन्जूसी करता** (है यानी अपना ही सदा के नफ़े का नुक़सान करता) **है, और** (नहीं तो) **अल्लाह तआ़ला तो किसी का मुहताज नहीं** (ताकि उसके नुक़सान का शुबह हो) **और** (बल्कि) **तुम सब** (उसके) **मुहताज हो** (और तुम्हारी ज़रूरत के लिए ही तुम को ख़र्च करने का हुक्म किया गया क्योंकि आख़रत में तुम को सवाब की ज़रूरत होगी और तरीक़ा उस का ये ही काम हैं) **और अगर तुम** (हमारे हुक्मों से) **मुंह फेरोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम**

पैदा कर देगा (और) **फिर वो तुम जैसे** (मुंह फेरने वाले) **न होंगे** (बल्कि कहना मानने वाले होंगे यह काम उन से लिया जाएगा)(38)

नोटः- ऊपर आयत में काफ़िरों से सुलह और समझौते को जो मना किया गया है यह वो सुलह है जिसका मन्शा बुज़दिली ऐश परस्ती और अल्लाह की राह में जिहाद करने से फरार हो लेकिन अगर मुसलमानों की भलाई सुलह में देखी जाए तो सुलह कर लेने में कोई हरज नहीं जैसा कि दूसरी आयत में आया है- यानी अगर काफ़िर सुलह की तरफ झुक जाएं तो आप भी झुक जाइये।

48-सूरत-फ़तह

इस मदनी सूरत में '4' रूकू और '29' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِنَّا فَتَحۡنَا لَکَ فَتۡحًا مُّبِیۡنًا ۙ﴿۱﴾ لِّیَغۡفِرَ لَکَ اللّٰہُ مَا تَقَدَّمَ مِنۡ ذَنۡۢبِکَ وَ مَا تَاَخَّرَ وَ یُتِمَّ نِعۡمَتَہٗ عَلَیۡکَ وَ
یَہۡدِیَکَ صِرَاطًا مُّسۡتَقِیۡمًا ۙ﴿۲﴾ وَّ یَنۡصُرَکَ اللّٰہُ نَصۡرًا عَزِیۡزًا ﴿۳﴾

आयत नं० 01 से 03

(ऐ पैग़म्बर) **बेशक हमने** (इस सुलह हुदैबिया से) **आप को एक खुली हुई जीत देदी(01)** (और जीत इस लिए दी गई) **ताकि** (दीन की तबलीग़ आसान हो जाए और कसरत से लोग इस्लाम में दाख़िल हों और इससे आप का सवाब बहुत बढ़ जाए और उसकी बरकत से) **अल्लाह तआ़ला आप की सब अगली पिछली ग़लतियां मुआफ़ कर दे और आप पर** (जो अल्लाह तआ़ला) **अपने अहसान** (करता आता है जैसे आप को पैग़म्बरी दी, क़ुरआन दिया बहुत से इल्म दिये बहुत से कामों का सवाब दिया उन अहसानों) **को पूरा कर दे और आप को** (बिना किसी रोक टोक के दीन के) **सीधे रास्ते पर ले चले** (क्योंकि काफ़िर दीन की राह में रूकावट डालते थे अब यह रूकावट न रहेगी)**(02) और अल्लाह आप को ऐसी जीत दे जिसमें इ़ज़्ज़त ही इ़ज़्ज़त हो** (यानी जिसके बाद आप को कभी किसी से दबना न पड़े बस ऐसा ही हुआ कि सारे अरब पर आप का क़ब्ज़ा हो गया)**(03)**।

नोटः- हिजरत के छटे साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़्वाब देखा कि सहाबा के साथ उमरा कर रहे हैं सहाबा ख़्वाब सुन कर उमरा करने के लिए जाने को तैयार हो गये जब मक्के के नज़दीक पहुंचे तो मक्के के काफ़िरों ने अन्दर दाख़िल होने से रोक दिया जंग का माहौल बन गया हुज़ूर ने सहाबा से जिहाद के लिए बैत ली जिसे ''बैते रिज़वान'' कहते हैं बाद में इस बात पर सुलह हो गई कि इस साल तो बिना उमरा किये वापस चले जाएं और अगले साल उमरा

करने आएं कुछ और भी शर्तें थीं जो देखने में दब कर की हुई सुलह थी मगर मुसलमानों की और दीन की भलाई की ख़ातिर हुज़ूर ने उसे मान लिया । सहाबा को इस तरह दबकर कीजाने वाली सुलह से बहुत दुःख हुआ इस पर ये आयतें उतरीं इस सुलह को सुलह हुदैबिया कहते हैं बाद में वो छुपी भलाइयां सब के सामने आगईं ।

هُوَ الَّذِیٓ اَنۡزَلَ السَّكِیۡنَةَ فِیۡ قُلُوۡبِ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ لِیَزۡدَادُوۡۤا اِیۡمَانًا مَّعَ اِیۡمَانِهِمۡ ؕ وَ لِلّٰهِ جُنُوۡدُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ
وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِیۡمًا حَكِیۡمًا ۙ﴿۴﴾ لِّیُدۡخِلَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ وَ الۡمُؤۡمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِیۡنَ فِیۡهَا وَ
یُكَفِّرَ عَنۡهُمۡ سَیِّاٰتِهِمۡ ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عِنۡدَ اللّٰهِ فَوۡزًا عَظِیۡمًا ۙ﴿۵﴾ وَّ یُعَذِّبَ الۡمُنٰفِقِیۡنَ وَ الۡمُنٰفِقٰتِ وَ الۡمُشۡرِكِیۡنَ
وَ الۡمُشۡرِكٰتِ الظَّآنِّیۡنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوۡءِ ؕ عَلَیۡهِمۡ دَآئِرَةُ السَّوۡءِ ۚ وَ غَضِبَ اللّٰهُ عَلَیۡهِمۡ وَ لَعَنَهُمۡ وَ اَعَدَّ لَهُمۡ
جَهَنَّمَ ؕ وَ سَآءَتۡ مَصِیۡرًا ﴿۶﴾ وَ لِلّٰهِ جُنُوۡدُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِیۡزًا حَكِیۡمًا ﴿۷﴾

आयत नं० 04 से 07

वो (अल्लाह) **ऐसा है जिसने मुसलमानों के दिलों में सहार पैदा की** (कि जंग का हुक्म हुआ तो तैयार हो गये सुलह की बात हुई तो मान ली) **ताकि उनके पहले ईमान के साथ उनका ईमान और ज़्यादा हो** (क्योंकि रसूल की ताबेदारी से ईमान का नूर ज़्यादा होता है)**, और आसमान व ज़मीन की सब फ़ौजें** (जैसे फ़रिशते और सब मख़लूकें) **अल्लाह ही की** (फ़ौजें) **हैं** (इसलिए काफ़िरों की हार और दीन इस्लाम की जीत के लिए वो तुम्हारे जिहाद का मुहताज नहीं वो अगर चाहे तो फ़रिशतों की फ़ौजें भेजदे)**, और अल्लाह तआ़ला** (छुपी भलाइयों का) **बड़ा जानने वाला हिकमत वाला है** (जब जंग में भलाई होती है उसका हुक्म देता है और जब जंग न करने में भलाई होती है उसका हुक्म देता है इसलिए मुसलमानों को चाहिए दोनों हालतों में रसूल के हुक्म के ताबे रहें)**(04) ताकि अल्लाह तआ़ला** (इस ताबेदारी की वजह से) **मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को ऐसी जन्नतों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी जिनमें सदा-सदा रहेंगे और ताकि** (इस ताबेदारी की वजह से) **उनके गुनाह दूर करदे, और यह** (जो कुछ बताया गया) **अल्लाह के नज़दीक बड़ी कामयाबी है(05) और** (यह तसल्ली व सहार काफ़िरों के दिल पर नहीं उतारी गई) **ताकि अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को** (उनके कुफ़्र की वजह से) **अज़ाब दे जो कि अल्लाह के साथ बुरे-बुरे गुमान रखते हैं,** (दुनिया में) **उन पर बुरा वक़्त**

पड़ने वाला है (जैसा कि कुछ दिनों बाद ही क़त्ल और गरिफ़्तार हुए और मुनाफ़िक़ों की सारी उम्र पछताने व परीशानी में कटी कि इस्लाम बढ़ता था और वो घटते जाते थे यह तो दुनिया में हुआ) **और** (आख़रत में) **अल्लाह तआ़ला उन पर ग़ुस्सा होगा और उनको रहमत से दूर कर देगा और उनके लिए उसने दोज़ख़ तैयार कर रक्खी है, और वो बहुत ही बुरा ठिकाना है(06) और आसमान व ज़मीन की सब फ़ौजें अल्लाह ही की हैं, और अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला है अगर चाहता इन सब का एक दम सफ़ाया कर देता कि ये इसके हक़दार हैं लेकिन चूंकि वो) **हिकमत वाला** (है इसलिए सज़ा में मोहलत देता) **है(07)।**

नोटः- ऊपर आयतों में सहाबा किराम पर जिन इनामों का ज़िक्र किया गया है वो चूंकि ईमान और रसूल की ताबेदारी की वजह से मिले इस हैसियत से जो भी मुसलमान ईमान व ताबेदारी में पूरा होगा वो इन इनामों का हक़दार होगा।

إِنَّآ أَرۡسَلۡنَٰكَ شَٰهِدٗا وَمُبَشِّرٗا وَنَذِيرٗا ۝٨ لِّتُؤۡمِنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُۚ وَتُسَبِّحُوهُ بُكۡرَةٗ
وَأَصِيلًا ۝٩ إِنَّ ٱلَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ ٱللَّهَ يَدُ ٱللَّهِ فَوۡقَ أَيۡدِيهِمۡۚ فَمَن نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنكُثُ عَلَىٰ
نَفۡسِهِۦۖ وَمَنۡ أَوۡفَىٰ بِمَا عَٰهَدَ عَلَيۡهُ ٱللَّهَ فَسَيُؤۡتِيهِ أَجۡرًا عَظِيمٗا ۝١٠

आयत नं० 08 से 10

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **हम ने आप को** (उम्मत के कामों पर क़ियामत के दिन) **गवाही देने वाला और** (दुनिया में मुसलमानों के लिए) **ख़ुशख़बरी देने वाला और** (काफ़िरों के लिए) **डराने वाला बनाकर भेजा है(08)** (और ऐ मुसलमानों हम ने उनको इसलिए रसूल बनाकर भेजा है) **ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उस** (के दीन) **की मदद करो और उस की इज़्ज़त करो** (अक़ीदे से भी और अमल से भी कि उसका कहना मानो)**, और सुबह शाम उस** (अल्लाह) **की तस्बीह करते रहो** (अगर इस तस्बीह की तफ़सीर नमाज़ से की जाए तो सुबह शाम की फ़र्ज़ नमाज़ें मुराद होंगी वर्ना आम ज़िक्र मुराद होगा)**(09) जो लोग आप से** (हुदैबिया के दिन इस बात पर) **बैत कर रहे हैं** (यानी आप के हाथ पर एहद कर चुके हैं कि जिहाद से भागेंगे नहीं) **तो वो** (असल में) **अल्लाह तआ़ला से बैत कर रहे हैं** (क्योंकि इरादा आप से इस पर बैत करने का है कि अल्लाह तआ़ला के हुक्मों को पूरा करेंगे, और जब यह बात है

तो जैसे) **अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है फिर** (बैत के बाद) **जो आदमी एहद तोड़ेगा** (यानी बजाए ताबेदारी के मुख़ालफ़त करेगा) **तो उस के एहद तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा और जो आदमी उस बात को पूरा करेगा जिस पर** (बैत में) **अल्लाह से एहद किया है तो जल्दी ही अल्लाह तआ़ला उस को बड़ा बदला देगा(10)।**

नोटः- बैत किसी ख़ास काम पर एहद लेने का नाम है इसका पुराना और सुन्नत तरीक़ा आपस में एहद करने वालों का हाथ पर हाथ रखना है मगर हाथ पर हाथ रखना शर्त और ज़रूरी नहीं। जिस काम का किसी से एहद किया जाए उस की पाबन्दी शरीअत से वाजिब व ज़रूरी है और उसके ख़िलाफ़ करना हराम है।

سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَ اَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا
لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۱﴾ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّ زُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ
قُلُوْبِكُمْ وَ ظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖۚ وَ كُنْتُمْ قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿۱۲﴾ وَ مَنْ لَّمْ يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ
سَعِيْرًا ﴿۱۳﴾ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۴﴾

आयत नं० 11 से 14

जो गांव के लोग (इस हुदैबिया के सफ़र से) **पीछे रह गये** (सफ़र में साथ नहीं गये) **वो जल्द ही** (जब कि आप मदीना पहुंचेंगे) **आप से** (बात बनाते हुए) **कहेंगे कि** (हम जो आप के साथ नहीं गये इसकी वजह यह हुई कि) **हम को हमारे माल और घर वालों ने फ़ुर्सत न लेने दी** (यानी उनकी ज़रूरतों में लगे रहे) **तो हमारे लिए** (इस ग़लती की) **मुआफ़ी की दुआ कर दीजिए,** (आगे अल्लाह तआ़ला उनको झूटा बताते हैं कि) **ये लोग अपनी ज़बान से वो बात कहते हैं जो उनके दिल में नहीं है,** (आगे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को समझाया है कि ये लोग जब आप से यह मजबूरी बताएं तो) **आप कह दीजिए कि** (अगर यह मजबूरी सच भी होती तो अल्लाह व रसूल के हुक्म के सामने कुछ भी नहीं दूसरे) **वो कौन है अल्लाह के सामने तुम्हारे लिए** (नफ़े नुक़सान में) **जिस का बस चलता हो अगर अल्लाह तआ़ला तुम को कोई नुक़सान या नफ़ा पहुंचाना**

चाहे (यानी तुम्हारी जान या माल और घर वालों में जो नफ़ा या नुक़सान नसीब में लिखा जा चुका उसे कौन बदल सकता है), **अल्लाह तआ़ला** (ने जो कि) **तुम्हारे सब कामों को जानता** (है मुझको वही से ख़बर दी है कि तुम झूटे हो और तुम्हारी ग़ैर हाज़िरी की वजह वो नहीं जो तुम ने बयान की) **है**(11) **बल्कि** (असल वजह यह है कि) **तुमने यह समझा कि पैग़म्बर और मुसलमान अपने घर वालों में कभी लौट कर न आएंगे** (बल्कि दुशमन सब का सफ़ाया कर देंगे) **और यह बात तुम्हारे दिलों को अच्छी लगती** (थी अल्लाह व रसूल से दुशमनी की वजह से तुम्हारी दिली तमन्ना भी) **थी और तुमने बुरे-बुरे गुमान किये और तुम** (उन बुरे गुमानों की वजह से जो कि कुफ़्र की बातें हैं) **बर्बाद होने वाले लोग हो गये**(12) **और** (अगर इन बातों को सुनकर तुम अब भी दिल से ईमान ले आओ तो ठीक वर्ना) **जो आदमी अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान न लाएगा तो काफ़िरों के लिए दोज़ख़ तैयार कर रक्खी है**(13) **और** (इस क़ानून पर किसी को अचम्भा न होना चाहिए क्योंकि) **सारे आसमानों व ज़मीन की हुकूमत अल्लाह ही की है, वो जिसको चाहे बख़्श दे और जिसको चाहे सज़ा दे और** (काफ़िर माना कि सज़ा का हक़दार होता है लेकिन) **अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला बहुत महरबान** (है कि वो भी सच्चे दिल से ईमान ले आए तो उसको भी बख़्श देता) **है**(14)

नोटः- ऊपर आयत में उन गांव वालों का ज़िक्र है जिनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुदैबिया के सफ़र में साथ चलने का हुक्म किया था मगर उन्होंने बहानाबाज़ी से काम लिया बाद में उनमें से कुछ हज़रात ने तौबा कर ली थी और सच्चे मुसलमान हो गये थे।

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ
اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا
قَلِيْلًا ﴿۱۵﴾ قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِىْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ
فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَ اِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶﴾ لَيْسَ
عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّ لَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّ لَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ؕ وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ
تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۷﴾ ع

आयत नं० 15 से 17

(मुसलमानो) **जो लोग** (हुदैबिया के सफ़र से) **पीछे रह गये वो जल्दी ही जब** (ख़ैबर की) **ग़नीमत** (के माल) **लेने जाओगे** (मतलब यह कि ख़ैबर जीतने के लिए चलोगे जहां जीत में ग़नीमत का माल मिलने वाला है) **तो** (ये लोग तुम से) **कहेंगे कि हम को भी इजाज़त दो कि हम तुम्हारे साथ चलें** (यह कहने की वजह माल का लालच था जो अन्दाज़े से पता चलता था जब कि हुदैबिया के सफ़र में परीशानी बल्कि हलाक होने की उम्मीद थी, इसके बारे में अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि) **वो लोग यह चाहते हैं कि अल्लाह के हुक्म को बदल दें** (यानी अल्लाह का हुक्म यह था कि उस जंग में सिर्फ़ वो लोग जाएं जो हुदैबिया और बैते रिज़वान में शरीक थे उनके सिवा और कोई न जाए ख़ास कर उन लोगों में जो जाने से रूके और बहाना बाज़ी की)**, तो आप कह दीजिए कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते** (यानी तुम्हारी यह बात नहीं मानी जा सकती क्योंकि इसमें अल्लाह के हुक्म को बदलने का गुनाह है क्योंकि) **अल्लाह ने पहले से यही ही कह दिया है** (यानी हुदैबिया से वापसी ही में अल्लाह तआ़ला ने यह हुक्म दे दिया था कि ख़ैबर की जंग में हुदैबिया वालों के सिवा कोई न जाएगा और जब आप उनको यह जवाब देंगे) **तो वो लोग कहेंगे** (कि हमारे साथ न लेने को जो अल्लाह का हुक्म बताया जाता है बात यह नहीं) **बल्कि तुम लोग हमसे जलते हो** (इसलिए हमारा साझी होना पसन्द नहीं हालांकि मुसलमानों में हसद का सवाल नहीं)**, बल्कि ख़ुद ये लोग बहुत कम बात समझते हैं** (अगर समझ पूरी होती तो अल्लाह के इस हुक्म की वजह समझ में आजाती कि हुदैबिया वालों ने बड़े ख़तरों और बड़े इम्तिहान का काम किया था)(15) **आप इन पीछे रह जाने वाले गांव वालों से** (यह भी) **कह दीजिए कि** (अगर एक ख़ैबर में न गये तो न सही सवाब पाने के और भी मौक़े आने वाले हैं जैसा कि) **जल्दी ही तुम लोग ऐसे लोगों** (से लड़ने) **की तरफ़ बुलाए जाओगे जो सख़्त लड़ने वाले होंगे** (मुराद इससे ईरान व रोम की जंगे हैं क्योंकि उन की फ़ौजें ट्रेनिंग ली हुई और जंगी सामान से लैस थी कि) **या तो उनसे लड़ते रहो या वो** (इस्लाम के) **ताबेदार हो जाएं** (मतलब यह कि तुम उस काम के लिए बुलाए जाओगे) **तो** (उस वक़्त) **अगर तुम कहना मानोगे** (और उनसे जिहाद करोगे) **तो तुम को अल्लाह तआ़ला नेक बदला देगा और अगर तुम उस वक़्त भी मुंह फेरोगे जैसा इसके पहले** (हुदैबिया में) **मुंह फेर चुके हो तो दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा**(16) (लेकिन मजबूर लोग इस जिहाद के हुक्म से अलग हैं जैसा कि) **न अन्धे पर कोई गुनाह है और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न बीमार पर कोई गुनाह है, और जो आदमी भी अल्लाह और उसके रसूल का कहना मानेगा** (अल्लाह) **उसको ऐसी**

जन्नतों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी और जो आदमी (हुक्म से) **मुंह फेरेगा उस को दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा**(17)।

नोटः- सिर्फ़ हुदैबिया वालों को ही जंगे ख़ैबर में जाने का जो हुक्म बयान हुआ है उस का कुरआन में कहीं साफ़ ज़िक्र नहीं बल्कि यह हुक्म पैग़म्बर के वास्ते से मालूम हुआ। इससे पता चला कि कुरआन के हुक्मों के अलावा जो हुक्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में आए हैं वो भी इस आयत के हिसाब से अल्लाह के हुक्म में दाख़िल हैं जो बेदीन लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस को दीन की दलील नहीं मानते ये आयतें उनके समझने के लिए काफ़ी हैं।

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَ
اَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۙ﴿۱۸﴾ وَّ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۹﴾ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ
كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَ كَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَ لِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَ يَهْدِيَكُمْ
صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ﴿۲۰﴾ وَّ اُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۱﴾

आयत नं० 18 से 21

यक़ीन जानो अल्लाह उन मुसलमानो से (जो सफ़र में आप के साथ हैं) **ख़ुश हुआ जबकि ये लोग** (हुदैबिया के दिन) **आप से पेड़ के नीचे** (जिहाद में जमे रहने पर) **बैत कर रहे थे और उनके दिलों में जो कुछ** (सच्चाई और एहद को पूरा करने का इरादा) **था अल्लाह को वो भी मालूम था और** (उस बैत को बैते रिज़वान कहते हैं और उस वक़्त) **अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों में इतमीनान** (और सुकून) **पैदा कर दिया** (जिससे उनको अल्लाह का हुक्म मानने में ज़रा झिजक नहीं हुई) **और** (इसके साथ ही) **उन को** (इनआम में) **हाथों हाथ एक जीत देदी** (मुराद इससे ख़ैबर की जीत है)(18) **और** (उस जीत में) **बहुत सी** (माली) **ग़नीमतें भी** (दीं) **जिनको ये लोग ले रहे हैं, और अल्लाह तआ़ला बड़ा ज़बरदस्त** (कुदरत वाला) **और बड़ा हिकमत वाला** (है कि अपनी कुदरत और हिकमत से जिसके लिए ठीक समझता है जीत देदेता) **है**(19) (और कुछ इस ख़ैबर की जीत पर ही बस नहीं बल्कि) **अल्लाह तआ़ला ने तुम से** (और भी) **बहुत सी** (माली) **ग़नीमतों का वादा कर रक्खा है जिन को तुम लोगे सो** (उनमें से) **हाथों हाथ तुम को यह देदी और**

(इसके देने के लिए ख़ैबर और उनके हिमायती) **लोगों के हाथ तुम से रोक दिये** (यानी सब के दिलों पर रौब डाल दिया कि उनको ज़्यादा ज़ोर दिखाने की हिम्मत न हुई और आराम से जीत गये), **और ताकि यह** (क़िस्सा) **ईमान वालों के लिए** (दूसरे वादों के सच्चा होने का) **एक नमूना हो जाए** (यानी अल्लाह के वादों के सच्चा होने पर और ज़्यादा ईमान पक्का हो जाए) **और ताकि** (इस नमूने से) **तुम को** (आगे के लिए हर काम में) **एक सीधे रास्ते पर डाल दे** (मुराद इस रास्ते से अल्लाह पर भरोसा है यानी सदा के लिए इस क़िस्से को सोच कर अल्लाह पर भरोसे से काम लिया करो)(20) **और एक जीत और भी** (मिलने वाली) **है जो** (इस वक़्त तक) **तुम्हारे क़ाबू में नहीं आई** (यानी मक्के की जीत मगर) **अल्लाह तआ़ला उसको** (अपनी क़ुदरत के) **घेर में लिए हुए है** (जब चाहेगा तुम को देदेगा), **और** (उसी की क्या ख़ास बात है) **अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है**(21)।

नोटः- ऊपर आयत में बैते रिज़्वान में शरीक होने वाले मुसलमानों के बारे में अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी हो जाने की ख़ुशख़बरी दी है और अल्लाह तआ़ला जिससे राज़ी हो जाए फिर उससे नाराज़ नहीं होते। और एक हदीस में बैते रिज़्वान में शरीक होने वाले मुसलमानों के बारे में आया है कि तुम लोग सारी रूए ज़मीन के इन्सानों से बेहतर हो। और एक हदीस में है कि जिन लोगों ने उस पेड़ के नीचे बैत की है उनमें कोई जहन्नम में न जाएगा। (मज़हरी)

तो जिन हज़रात के बारे में अल्लाह तआ़ला ने रज़ामन्दी और मग़फ़िरत का ऐलान कर दिया है उनसे अगर कोई ग़लती या गुनाह भी हो जाए तो इस आयत की रू से उनकी मुआफ़ी का ऐलान है इसलिए उनमें से किसी को बुरा समझना इस आयत की मुख़ालफ़त है। जो लोग हज़रत अबूबक्र व हज़रत उमर रज़ि० या दूसरे सहाबा पर मुनाफ़िक़ हो जाने का इल्ज़ाम लगाते हैं जैसा कि राफ़ज़ियों का तरीक़ा है वो इस आयत की मुख़ालफ़त करते हैं।

وَ لَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّ لَا نَصِيْرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ
قَبْلُ ۚۖ وَ لَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَ اَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ
مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿٢٤﴾ هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَ الْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَ لَوْ لَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَ نِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ
تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ
اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ۭ وَكَانَ
اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٢٦﴾

आयत नं० 22 से 26

और (काफ़िरों की हार के ऐसे सामान मौजूद थे कि) **अगर** (तुम में यह सुलह न होती बल्कि) **तुम से ये काफ़िर लड़ते तो ज़रूर पीठ फेर कर भाग जाते फिर उनको कोई यार मददगार न मिलता**(22) (और) **अल्लाह तआ़ला ने** (काफ़िरों के लिए) **ये ही दस्तूर कर रक्खा है जो पहले से चला आता** (है कि मुक़ाबिले में सच्चों की जीत हुई और झूटे हारे हैं और अगर किसी छुपी भलाई की वजह से इसमें देर हो जाए तो और बात) **है और आप अल्लाह के दस्तूर में** (किसी आदमी की तरफ़ से) **बदलाव न पाएंगे** (कि अल्लाह तआ़ला कोई काम करना चाहे और कोई उस को न होने दे)(23) **और वो ऐसा है कि उसने उनके हाथ तुम से** (यानी तुम्हारे क़त्ल से) **और तुम्हारे हाथ उन** (के क़त्ल) **से ख़ास मक्के** (के पास) **में** (यानी हुदैबिया में) **रोक दिये जब कि वो तुम को उन पर क़ाबू दे चुका था** (यह क़िस्सा उस वक़्त का है जब कि सहाबा ने मक्के वालों के पचास लोगों को पकड़ लिया था और मक्के वालों ने हज़रत उस्मान और उनके साथियों को मक्के में रोक लिया अगर मुसलमान मक्के वालों को क़त्ल कर देते तो मक्के वाले मुसलमानों को और इस तरह जंग छिड़ जाती मगर अल्लाह ने दिलों में ऐसी बात डाली कि जंग न होने दी), **और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को** (उस वक़्त) **देख रहा था** (और उन कामों के नतीजों को जानता था इसलिए ऐसा काम नहीं होने दिया जिससे जंग छिड़ जाए)(24) **ये वो लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम को** (उमरा करने के लिए) **ख़ाना काबा से रोका और क़ुरबानी के जानवर जो** (हुदैबिया में) **रूके हुए थे उन को उनके मौक़े में पहुंचने से रोका, और** (ये ऐसी बातें थीं जिनकी वजह से उनको सज़ा देना ज़रूरी थी) **अगर** (मक्के में उस वक़्त) **बहुत से मुसलमान मर्द और बहुत सी मुसलमान औरतें न होतीं जिन की तुम को ख़बर भी न थी यानी उनके पिस जाने का डर न होता जिस पर उनकी वजह से तुम को भी बेख़बरी में** (दुख व तकलीफ़ का) **नुक़सान पहुंचता** (अगर यह बात न होती) **तो काम तमाम कर दिया जाता, लेकिन इसलिए नहीं किया गया ताकि अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत में जिसको चाहे दाख़िल करे** (बस जंग न होने से उन मुसलमानों की जान बची और तुम उनके क़त्ल के गुनाह और फिर उस पर दुःख व अफ़सोस से बचे लेकिन)

अगर ये (मुसलमान मक्के से) **हट गये होते तो उन** (मक्के वालों) **में जो काफ़िर थे हम उन को** (मुसलमानों के हाथ से) **दर्दनाक सज़ा देते**(25) (और उन काफ़िरों की सज़ा की एक और वजह भी थी) **जब कि उन काफ़िरों ने नासमझी की ज़िद रक्खी** (इस ज़िद से मुराद वो शर्तें हैं जो सुलह और समझौता होने में रूकावट डाल रहीं थीं) **सो** (ऐसी सूरत में मुसलमान जोश में आकर लड़ पड़ते मगर) **अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को और मोमिनों को अपनी तरफ़ से सहार दी** (जिसकी वजह से उन्होंने सब्र से काम लिया और सुलह हो गई) **और** (उस वक़्त) **अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को तक़्वा** (व परहेज़गारी) **की बात पर जमाए रक्खा और वो** (मुसलमान) **उस** (तक़्वे की बात) **के** (दुनिया में भी) **ज़्यादा हक़दार हैं और** (आख़रत में भी) **उस** (सवाब) **के लाइक़ हैं, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानता है**(26)।

नोटः- इमाम क़ुरतबी रह० ने फ़रमाया कि अगर बेख़बरी में किसी मुसलमान के हाथों कोई मुसलमान मारा जाए वो गुनाह तो नहीं मगर एक ऐब शर्म और पछतावे की बात है अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल के सहाबा की इससे भी हिफ़ाज़त की। इससे मालूम हुआ कि सहाबा किराम के साथ अल्लाह का मुआमला यह है कि वो पैग़म्बरों की तरह मासूम तो नहीं मगर आम तौर पर उनको ख़ताओं और ऐबों से बचाने का क़ुदरती इन्तिज़ाम हो जाता है।

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَ
مُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾ هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ
بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗۤ
اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ فِيْ
وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۛۚ وَ مَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۛ۫ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ
فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

आयत नं० 27 से 29

बेशक अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को सच्चा ख़्वाब दिखाया है जो इसी तरह होना

है तुम लोग ख़ाना काबा में इन्शाअल्लाह ज़रूर जाओगे अमन व अमान के साथ कि बिना किसी डर ख़ौफ़ के तुम में कोई सर मुन्डाता होगा कोई बाल कटाता होगा (यानी छोटे कराता होगा जैसा कि अगले साल ऐसा ही हुआ), **बस** (इस साल से देरी की वजह यह है कि) **अल्लाह तआ़ला को वो बातें** (और हिकमतें) **मालूम हैं जो तुम नहीं जानते** (उन हिकमतों में से एक यह भी है) **कि इस** (ख़्वाब के पूरा होने) **से पहले तुम को एक नज़दीकी जीत** (ख़ैबर की) **देदी** (ताकि उससे पहले मुसलमानों को ताक़त और सामान हासिल हो जाए और वो पूरी तसल्ली से उमरा अदा करें जैसा कि ऐसा ही हुआ)(27) **वो अल्लाह ऐसा है कि उसने अपने रसूल को हिदायत** (का सामान यानी क़ुरआन) **और सच्चा दीन** (इस्लाम) **देकर भेजा है ताकि उस** (दीन) **को सभी दीनों से ऊपर रक्खे, और** (नासमझ लोग अगर आप के नाम के साथ रसूल न लिखना चाहें जैसा कि सुलह हुदैबिया के मौक़े पर मुशरिकों की तरफ़ से हुआ तो आप ग़म न करें क्योंकि आप की पैग़म्बरी पर) **अल्लाह काफ़ी गवाह है**(28) (अल्लाह ने आप की पैग़म्बरी को खुली दलीलों और मोजिज़ों से साबित कर दिया है कि) **मुहम्मद** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **अल्लाह के रसूल हैं, और जो लोग आप के साथ रहे हैं** (चाहे कम वक़्त रहे हों या ज़्यादा यानी सभी सहाबा ऐसे हैं कि) **वो काफ़िरों के मुक़ाबिले में तेज़** (और मज़बूत) **हैं** (और) **आपस में महरबान** (और नर्म) **हैं** (और) **तुम उन्हें देखोगे कि कभी रूकू कर रहे हैं कभी सजदा कर रहे हैं** (और) **अल्लाह तआ़ला की महरबानी और ख़ुशी** (यानी सवाब और नज़दीकी) **की कोशिश में लगे हुए हैं, उन** (की बन्दगी) **के आसार** (उनके) **सजदे के असर से उनके चेहरों पर दिखाई देते** (हैं यानी वो नूर के आसार जो परहेज़गार मुसलमान के चेहरे पर दिखाई देते) **हैं, ये उन की ख़ूबियां तौरेत में हैं और इन्जील में उनकी यह ख़ूबी** (लिखी) **है कि जैसे खेती कि उसने** (पहले ज़मीन से) **कोंपल निकाली फिर उसने** (मिट्टी व पानी और हवा से ख़ूराक पाकर अपनी) **उस** (कोंपल) **को मज़बूत किया** (यानी यह खेती जान पकड़ गई) **फिर वो खेती और मोटी हुई फिर अपने तने पर सीधी खड़ी हो गई कि** (अपने हरे भरे होने से) **किसानों को भली मालूम होने लगी** (इसी तरह सहाबा में पहले कमज़ोरी थी फिर रोज़ाना ताक़त बढ़ती गई और अल्लाह तआ़ला ने सहाबा किराम को यह तरक़्क़ी इसलिए दी) **ताकि उन** (की हालत) **से काफ़िरों** (के दिलों) **को** (हसद में) **जलादे,** (और आख़िरत में) **उन साहिबों से जो कि ईमान लाए हैं और नेक काम कर रहे हैं अल्लाह तआ़ला ने** (गुनाहों की) **बख़्शिश और** (नेक कामों पर) **बड़े सवाब का वादा कर रक्खा है**(29)।

नोटः- ऊपर आयत में बताया गया कि इन्शाअल्लाह ख़ाना काबा में अमन के साथ दाख़िल हो जाओगे इससे मालूम हुआ कि कोई भी काम करने का इरादा करते वक़्त इन्शाअल्लाह कहना चाहिए।

ऊपर आयतों में सहाबा किराम की फ़ज़ीलतों का बयान है....और....रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ''तमाम ज़मानों में मेरा ज़माना बेहतर है (यानी सहाबा किराम) उसके बाद उस ज़माने के लोग बेहतर हैं जो मेरे ज़माने से मुत्तसिल हैं (यानी ताबईन किराम जिन्होंने सहाबा को देखा) फिर वो जो उन से मुत्तसिल हैं (यानी तबे ताबईन जिन्होंने ताबईन को देखा)''
(बुख़ारी)

एक हदीस में इरशाद है कि ''मेरे सहाबा को बुरा न कहो । क्योंकि (उनके ईमान की वजह से उनका हाल यह है कि) अगर तुम में से कोई आदमी अल्लाह की राह में उहद पहाड़ की बराबर सोना ख़र्च करदे तो वो उनके ख़र्च किये हुए एक मुद (किलो) की बराबर भी नहीं हो सकता और न आधे मुद की बराबर''। (बुख़ारी)

हज़रत जाबिर रज़ि० की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ''अल्लाह तआला ने मेरे सहाबा को सारे जहान में से पसन्द फ़रमाया है फिर मेरे सहाबा में मेरे लिए चार को पसन्द फ़रमाया है अबूबक्र, उमर, उस्मान व अली रज़ियल्लाहु अन्हुम। (अबुबज़ार)

एक हदीस में है कि ''मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरो। मेरे बाद उनको ऐतराज़ का निशाना न बनाओ (बुरा न कहो) क्योंकि जिस आदमी ने उन से मुहब्बत की तो मेरी मुहब्बत के साथ उनसे मुहब्बत की और जिसने उनसे दुशमनी रक्खी तो मेरी दुशमनी के साथ उनसे दुशमनी रक्खी। और जिसने उनको तकलीफ़ पहुंचाई उसने मुझे तकलीफ़ पहुंचाई और जिसने मुझे तकलीफ़ दी उसने अल्लाह को तकलीफ़ पहुंचाई। और जो अल्लाह को तकलीफ़ पहुंचाने का इरादा करे तो क़रीब है कि अल्लाह उसको अज़ाब में पकड़ लेगा। (जमाउल फ़वाइद)

49-सूरत-हुजुरात

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '18' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝۱ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ
وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝۲ اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ
لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝۳ اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝۴ وَ
لَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۵

आयत नं० 01 से 05

ऐ ईमान वालो अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त) **से पहले तुम** (किसी बात या काम में) **आगे न बढ़ा करो और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला** (तुम्हारी सब बातों को) **सुनने वाला** (और तुम्हारे कामों को) **जानने वाला है(01)** (और) **ऐ ईमान वालो तुम अपनी आवाज़ें पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **की आवाज़ से ऊंची मत किया करो और न उनसे ऐसे खुल कर बोला करो जैसे आपस में खुलकर बोलते हो** (यानी न तो आपस में आप के सामने ऊंची आवाज़ से बोलो और न आप से बात करते हुए बराबर की आवाज़ से बोलो) **कभी तुम्हारे सब किये काम बर्बाद हो जाएं और तुम को पता भी न चले** (क्योंकि तेज़ आवाज़ में बोलने से पैग़म्बर को नागवारी और तकलीफ़ हो सकती है और अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ पहुंचाना सभी कामों को बर्बाद कर देने वाला है)**(02) बेशक जो लोग अपनी आवाज़ों को रसूलुल्लाह** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **के सामने धीमी रखते हैं ये वो लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह तआ़ला ने तक़्वे के लिए चुन लिया** (है यानी उनके दिलों में परहेज़गारी के ख़िलाफ़ कोई चीज़ आती ही नहीं) **हैं, उन लोगों के लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है(03)** (और) **जो लोग**

हुजरों के बाहर से आप को पुकारते हैं उनमें से अक्सर को समझ नहीं है (कि समझ होती तो आप का अदब करते इस तरह नाम लेकर बाहर से पुकारने की हिम्मत न करते)(04) **और अगर ये लोग** (ज़रा) **सब्र** (और इन्तिज़ार) **करते यहां तक कि आप ख़ुद उनके पास आजाते तो यह उनके लिए अच्छा होता** (क्योंकि यह अदब की बात थी), **और** (अगर अब भी तौबा करलें तो मुआफ़ हो जाए क्योंकि) **अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बहुत महरबान है**(05)

नोटः- कुछ सहाबा ने किसी मुआमले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मशवरा करने से पहले अपनी राय देना शुरू कर दी थी और आपस में ज़ोर से बोलने लगे जिस पर शुरू की आयतें उतारीं। और कुछ देहाती लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को घर के बाहर दरवाज़े पर नाम लेकर आवाज़ देना शुरू कर दिया जिस पर उन्हें अदब सिखाया गया और बाद वाली आयतों में ताकीद की गई।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِن جَآءَكُمۡ فَاسِقُۢ بِنَبَإٖ فَتَبَيَّنُوٓاْ أَن تُصِيبُواْ قَوۡمَۢا بِجَهَٰلَةٖ فَتُصۡبِحُواْ عَلَىٰ مَا فَعَلۡتُمۡ نَٰدِمِينَ ۝٦

आयत नं० 06

ऐ ईमान वालो अगर कोई शरारती आदमी तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए (जिसमें किसी की कोई शिकायत हो) **तो** (पहले) **अच्छी तरह खोजबीन कर लिया करो** (ताकि असलीयत पता चल जाए) **कहीं ऐसा न हो कि किसी क़ौम को नासमझी से कोई नुक़सान पहुंचा दो फिर अपने किये पर पछताना पड़े**(06)

नोटः- हज़रत वली बिन उक़बा रज़ि० को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़बीला बनू मुस्तलक़ के पास ज़कात वसूल करने भेजा वो लोग बहुत से इकट्ठे होकर बस्ती से बाहर उनको लेने आए क्योंकि उस क़बीले से उनकी पुरानी दुशमनी थी इसलिए यह समझा कि ये तो लड़ने आए हैं बस वापस लौट गये और अपने अन्दाज़े से कह दिया कि वो ज़कात नहीं देना चाहते बल्कि लड़ाई के लिए तैयार हैं। जब हज़रत ख़ालिद को भेजकर पता कराया तो बात कुछ और निकली इस पर ये आयतें उतरीं यानी जब एक सहाबी को बात समझने में ग़लती हो सकती है तो फिर

आम आदमी का तो ज़िक्र ही क्या और ख़ासकर शरारती और फ़ासिक़ आदमी का तो क्या ऐतबार उससे तो बहुत ज़्यादा अहतियात की ज़रूरत है इसलिए सदा के लिए एक तरीक़ा बता दिया गया।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَ زَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَ كَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۙ۝۷ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ نِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝۸

आयत नं० 07 से 08

और जान लो कि तुम में अल्लाह के रसूल (मौजूद हैं जो अल्लाह की बड़ी नेमत) **हैं,** (इस नेमत का शुक्र यह है कि किसी बात में रसूल के ख़िलाफ़ मत करो चाहे दुनिया ही की बात क्यों न हो और यह मत चाहो कि दुनिया की बातों में ख़ुद पैग़म्बर हमारी राय मानें क्योंकि) **बहुत सी बातें ऐसी होती हैं कि अगर वो उसमें तुम्हारा कहना माना करें तो तुम को बड़ा नुक़सान पहुंचे लेकिन अल्लाह तआ़ला ने** (तुम को मुसीबत से बचा लिया इस तरह से कि) **तुम को ईमान** (के ऊंचे दर्जे) **की मुहब्बत दी और उस** (के पाने) **की तुम्हारे दिलों में चाहत पैदा कर दी और कुफ़्र और बड़े गुनाहों और आम गुनाहों से तुम को नफ़रत देदी** (जिससे तुम को हर वक़्त रसूल को राज़ी करने की लगन रहती है जिससे तुम उन हुक्मों को मान लेते हो जो रसूल को राज़ी करने वाले हैं)**, ऐसे लोग** (जो ईमान का ऊंचा दर्जा चाहते हैं) **सीधे रास्ते पर हैं(07) अल्लाह तआ़ला की महरबानी और इनआम से, और अल्लाह तआ़ला** (ने जो ये हुक्म दिये हैं तो वो उनकी भलाइयों को) **जानने वाला** (है और चूंकि) **हिकमत वाला** (है इसलिए इन हुक्मों को वाजिब कर दिया) **है(08)।**

नोटः- जिन बातों में मशवरा किया जाए उनमें अपनी राय देना तो ठीक है लेकिन यह कोशिश करना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हारी राय पर ही अमल करें यह ठीक नहीं।

وَ اِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَ اَقْسِطُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝۹ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝۱۰

आयत नं० 09 से 10

और अगर मुसलमानों में दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच में सुलह (करादो यानी झगड़े की बुनियाद को दूर करके लड़ाई बन्द) **करादो, फिर अगर** (सुलह की कोशिश के बाद भी) **उनमें का एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे** (और लड़ाई बन्द न करे) **तो उस गिरोह से लड़ो जो ज़्यादती करता है यहां तक कि वो अल्लाह के हुक्म की तरफ़ लौट आए** (यानी लड़ाई बन्द कर दे)**, फिर अगर** (वो) **ज़्यादती करने वाला** (गिरोह अल्लाह के हुक्म की तरफ़) **लौट आए** (यानी लड़ाई बन्द करदे) **तो उन दोनों के बीच इन्साफ़ के साथ सुलह करादो** (यानी शरीअत की हदों में उस मुआमले को तय करादो सिर्फ़ लड़ाई बन्द करने को काफ़ी न समझो वर्ना फिर भी झगड़ा हो सकता है) **और इन्साफ़ का ध्यान रक्खो, बेशक अल्लाह तआला इन्साफ़ वालों को पसन्द करता है(09)** (और आपसी सुलह और मिलाप का हुक्म इसलिए दिया गया है कि) **मुसलमान तो सब** (दीनी रिशते से एक दूसरे के) **भाई हैं इसलिए अपने दो भाइयों के बीच सुलह करा दिया करो** (ताकि यह इस्लामी बिरादरी बनी रहे) **और** (सुलह के वक़्त) **अल्लाह से डरते रहा करो** (यानी शरीअत की हदों का ध्यान रक्खा करो) **ताकि तुम पर रहमत की जाए(10)।**

नोटः- हज़रत हसन बसरी रह० से सहाबा के आपसी झगड़ों के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि ''ऐसी लड़ाई थी जिसमें सहाबा मौजूद थे और हम ग़ाइब। वो पूरे हालात को जानते थे और हम नहीं जानते। जिस बात पर सभी सहाबा एक राय हैं हम उसमें उनके पीछे चलते हैं। और जिस बात में वो एक राय नहीं उनमें झगड़ा है उसमें चुप रहते हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ
يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَ لَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ لَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ
وَ مَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۱﴾

आयत नं० 11

ऐ ईमान वालों न मर्दों को मर्दों पर हंसना चाहिए हो सकता है कि (जिन पर हंसते हैं) **वो उन** (हंसने वालों) **से** (अल्लाह के नज़दीक) **बहतर हों** (फिर वो कैसे गिरा हुआ समझते हैं) **और**

न औरतों को औरतों पर हंसना चाहिए हो सकता है कि (जिन पर हंसती हैं) **वो उन** (हंसने वालियों) **से** (अल्लाह के नज़दीक) **बेहतर हों** (फिर वो कैसे गिरा हुआ समझती हैं)**, और तुम एक दूसरे को ताना न दिया करो और न एक दूसरे को बुरे नाम** (यानी चिड़ाने वाले नाम) **से पुकारो,** (क्योंकि ये सब बातें गुनाह की हैं और) **ईमान लाने के बाद** (मुसलमान पर) **गुनाह का नाम लगना** (ही) **बुरा है** (तो इससे बचो)**, और जो** (इन हरकतों से) **बाज़ न आएंगे तो वो जुल्म करने वाले** (और बन्दों के हक़ों को बर्बाद करने वाले) **हैं** (जो सज़ा ज़ालिमों को मिलेगी वो ही उन को मिलेगी)(11)

नोटः- एक हदीस में है कि ''जो आदमी किसी मुसलमान को ऐसे गुनाह पर शर्मिन्दा करे जिससे उसने तौबा कर ली है तो अल्लाह ने अपने ज़िम्मे लिया है कि उसको उसी गुनाह में डालकर दुनिया व आख़रत में रूसवा करेगा''। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया ''कि मैं अगर किसी कुत्ते की भी हंसी उड़ाऊं तो मुझे डर होता है कि कुत्ता न बना दिया जाऊं'' । (क़रतबी)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّ لَا تَجَسَّسُوْا وَ لَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ۝۱۲

आयत नं० 12

ऐ ईमान वालो बहुत से गुमानों से बचा करो, क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं (जैसे किसी के बारे में बिना सबूत के बुराई की बात सोच लेना) **और** (किसी के ऐब की) **खोजबीन न किया करो और किसी की ग़ीबत** (यानी पीठ पीछे बुराई) **भी न किया करो,** (आगे ग़ीबत की बुराई है कि) **क्या तुम में कोई इस बात को पसन्द करता है कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाले उस को तो तुम** (ज़रूर) **बुरा समझते हो** (तो समझ लो कि किसी भाई की ग़ीबत भी इसी के जैसी है) **और अल्लाह से डरते रहो** (ग़ीबत छोड़ दो तौबा करलो)**, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा तौबा कुबूल करने वाला महरबान है**(12)

नोटः- एक हदीस में है कि मुसलमानों की ग़ीबत न करो और उनके ऐबों की खोजबीन न करो क्योंकि जो आदमी मुसलमानों के ऐबों की खोजबीन करता है अल्लाह तआ़ला उसके ऐबो की तलाश

करता है और जिसके ऐबों की तलाश अल्लाह तआ़ला करे उसको उसके घर के अन्दर भी रूसवा कर देता है। (क़ुरतबी)

एक हदीस में है कि ग़ीबत का कफ़्फ़ारा यह है कि जिसकी ग़ीबत की गई है उसके लिए अल्लाह तआ़ला से मुआफ़ी की दुआ करे और ऐसे कहे या अल्लाह हमारे और उसके गुनाहों को मुआफ़ कर दीजिए। (मज़हरी)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّ اُنْثٰى وَ جَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ قَبَآىِٕلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝۱۳

आयत नं० 13

ऐ लोगो हमने तुम (सब) **को एक मर्द और एक औरत** (यानी आदम व हव्वा) **से पैदा किया है** (इस लिए इसमें तो सब इन्सान बराबर हैं) **और** (फिर जिस बात में फ़र्क़ रक्खा है कि) **तुम को अलग-अलग क़ौमें और** (फिर उन क़ौमों में) **अलग-अलग ख़ानदान बनाया** (यह सिर्फ़ इसलिए) **ताकि एक दूसरे को पहचान सको** (जिसमें बहुत सी भलाईयां छुपी हैं न इसलिए कि एक दूसरे पर बड़ाई जिताओ, क्योंकि) **अल्लाह के नज़दीक तुम सब में ज़्यादा इ़ज़्ज़त वाला वो है जो सब से ज़्यादा परहेज़गार हो,** (और परहेज़गारी का पूरा हाल किसी को मालूम नहीं बल्कि उसके हाल को) **अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानने वाला और पूरा ख़बरदार है** (इसलिए किसी ख़ानदान और क़ौम पर घमन्ड न करो)(13)

नोटः- यह आयत फ़तह मक्का के मौक़े पर उस वक़्त उतरी जब कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल हबशी रज़ि० को अज़ान का हुक्म दिया मक्के के क़ुरैशी जो अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे उनमें से एक ने कहा कि अल्लाह का शुक्र है कि मेरे बाप पहले ही इन्तिक़ाल कर गये उनको यह बुरा दिन देखना नहीं पड़ा। और एक ने कहा कि क्या मुहम्मद (स०अ०व०) को इस काले कव्वे के सिवा कोई आदमी नहीं जुड़ा जो मस्जिदे काबा में अज़ान दे। अबुसुफ़यान बोले कि मैं कुछ नहीं कहता क्योंकि मुझे ख़तरा है कि मैं कुछ कहूंगा तो आसमानों का मालिक उनको ख़बर कर देगा। तो जिबरील अलैहिस्सलाम आए और हुज़ूर को इस सारी बात की ख़बर दी आप ने उन लोगों को बुलाकर पूछा कि तुमने कहा था उन्होंने इक़रार कर लिया

उसी पर यह आयत उतरी जिसने बता दिया कि बड़ाई व इज़्ज़त असल में ईमान और परहेज़गारी है जिससे तुम लोग ख़ाली हो और हज़रत बिलाल में मौजूद हैं इसलिए वो तुमसे बेहतर और इज़्ज़तदार हैं। (मज़हरी)

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَ لٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَ لَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ اِنْ
تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿۱۵﴾ قُلْ
اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۶﴾ يَمُنُّوْنَ
عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾

आयत नं० 14 से 18

ये (कुछ) **देहाती लोग** (आप के पास आकर अहसान जिताते हुए) **कहते हैं कि हम ईमान ले आए, आप कह दीजिए कि तुम ईमान तो नहीं लाए** (क्योंकि उसके लिए दिल से मानना ज़रूरी है और वो है नहीं) **लेकिन** (हां) **यह कहो कि** (हम मुख़ालफ़त छोड़ कर) **ताबेदार हो गये और अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ** (इसलिए ईमान का दावा मत करो), **और** (अब तक तुम ईमान तो नहीं लाए लेकिन अब भी) **अगर तुम अल्लाह व रसूल का** (सब बातों में) **कहना मान लो** (जिसमें यह भी दाख़िल है कि दिल से ईमान ले आओ) **तो अल्लाह तुम्हारे किये कामों** (के सवाब) **में से** (जो कि ईमान के बाद होंगे) **ज़रा भी कम न करेगा** (बल्कि सब का पूरा-पूरा सवाब देगा, क्योंकि) **बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है**(14) (सुनो) **पूरे ईमान वाले** (तो) **वो लोग हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर** (ईमान पर जमे भी रहे यानी उम्र भर कभी) **शक नहीं किया और अपने माल व जान से अल्लाह के रास्ते में** (यानी दीन के लिए) **महनत उठाई** (जिसमें जिहाद हिजरत सब आगया), **ये लोग** (पूरे) **सच्चे हैं**(15) (सो) **आप** (उनसे) **कह दीजिए कि** (तुम जो ईमान का दावा करते हो) **क्या अल्लाह तआ़ला को अपने दीन** (क़ुबूल करने) **की ख़बर देते हो, हालांकि अल्लाह को तो सब आसमानों और ज़मीन की सब चीज़ों की** (पूरी) **ख़बर है, और** (अलावा आसमान व ज़मीन के) **अल्लाह** (और भी) **सब चीज़ों को**

जानता (है तो उसको कोई क्या बताएगा उसको तो तुम्हारे ईमान न लाने का हाल मालूम) **है**(16) (और) **ये लोग अपने इस्लाम लाने का आप पर अहसान रखते** (हैं कि देखिए हम बिना लड़ाई झगड़े के मुसलमान हो गये और दूसरे लोग बहुत परीशान करके मुसलमान हुए ये बेअदबी की बातें) **हैं,** (तो) **आप कह दीजिए कि मुझ पर अपने इस्लाम लाने का अहसान न रक्खो** (कि तुम्हारे इस्लाम लाने से मेरा क्या नफ़ा होगा और इस्लाम न लाने से मेरा क्या नुक़सान हो गया अगर तुम सच्चे होते तो तुम्हारी ही आख़रत का नफ़ा था और झूटे होने में भी तुम्हारा ही दुनिया का नफ़ा है पकड़ से बच गये तो मुझ पर अहसान रखना ना समझी है) **बल्कि अल्लाह तुम पर अहसान रखता है कि उसने तुम को ईमान की हिदायत दी अगर तुम** (इस ईमान के दावे में) **सच्चे हो**(17) (और यह याद रक्खो कि) **अल्लाह तआ़ला आसमानों और ज़मीन की सभी छुपी बातों को जानता है, और** (इसीलिए) **तुम्हारे सब कामों को भी जानता** (है और उसी के हिसाब से तुम को बदला देगा फिर उसके सामने बातें बनाने से क्या फ़ाइदा) **है**(18)।

नोटः- क़बीला बनी असद के कुछ आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और माली मदद हासिल करने के लिए अपने मुसलमान हो जाने का ऐलान किया जबकि दिल से इस्लाम नहीं लाए थे और अपने मुसलमान हो जाने का अहसान भी रखना चाहा जिस पर ये आयतें उतरीं।

50-सूरत-क़ाफ़

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '45' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۚ﴿۱﴾ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۚ﴿۲﴾ ءَاِذَا مِتْنَا
وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ﴿۳﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ﴿۴﴾ بَلْ كَذَّبُوْا
بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ﴿۵﴾ اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا
مِنْ فُرُوْجٍ ﴿۶﴾ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۙ﴿۷﴾ تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى
لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿۸﴾ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ۙ﴿۹﴾ وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا
طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۙ﴿۱۰﴾ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۭ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ﴿۱۱﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ
اَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ۙ﴿۱۲﴾ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۙ﴿۱۳﴾ وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۭ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ
فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿۱۴﴾ اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ۭ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۧ﴿۱۵﴾

आयत नं० 01 से 15

काफ़ (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है) **क़सम है क़ुरआन मजीद की** (जिसका मरतबा दूसरी किताबों से बड़ा है कि हमने आप को क़ियामत के अज़ाब से डराने के लिए भेजा है मगर इन लोगों ने नहीं माना)(01) **बल्कि** (उनको) **इस बात पर अचम्भा हुआ कि उनके पास उन्हीं** (की जिन्स इन्सानों) **में से एक** (क़ियामत के दिन से) **डराने वाला** (पैग़म्बर) **आगया तो** (इस पर) **काफ़िर लोग कहने लगे कि** (इन्सान का पैग़म्बर होना और दोबारा ज़िन्दा होने का दावा करना) **यह** (एक) **अजीब बात है**(02) (भला) **जब हम मर गये और मिट्टी हो गये तो क्या दोबारा ज़िन्दा होंगे यह** (दोबारा ज़िन्दा होना) **तो** (हमारी समझ से) **बहुत दूर है**(03) (यानी हैरानी इस पर है कि मरने और मिट्टी हो जाने के बाद हवा पानी व मिट्टी में बिखरे हुए जिस्म के हिस्सों को कैसे जमा

किया जाएगा तो इसके जवाब में अल्लाह तआला कहते हैं कि) **हम उनके उन हिस्सों को जानते हैं जिनको मिट्टी** (खाती है और) **कम करती है और** (हमने उन सब बातों को तक़दीर की किताब में लिख लिया था और) **हमारे पास** (वो) **किताब हिफ़ाज़त से** (मौजूद है जिसमें एक-एक बात लिखी) **है**(04) (मगर ये लोग फिर भी बेवजह अचम्भे में हैं) **बल्कि सच्ची बात** (यानी पैग़म्बरी और आख़रत की ज़िन्दगी) **को जब कि वो उनके पास पहुंचती है झुटलाते हैं बस वो एक डांवा डोल हालत में हैं** (कि कभी अचम्भा है कभी झुटलाना है)**(05) क्या उन लोगों** (को हमारी कुदरत का इल्म नहीं और क्या उन्हों)**ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा कि हमने उस को कैसा** (ऊंचा और बड़ा) **बनाया और** (सितारों से) **उसको सजाया और उसमें कोई दरार तक नहीं** (जैसा कि अक्सर इमारतों में ज़्यादा ज़माना होने के बाद दरार पड़ जाया करती है)**(06) और ज़मीन** (में कुदरत की निशानी यह है कि उस) **को हमने फैलाया और उसमें पहाड़ों को जमा दिया और उसमें हर क़िस्म की अच्छी-अच्छी चीज़ें उगाईं(07) ताकि वो अल्लाह से लौ लगाने वाले हर बन्दे के लिए नसीहत और समझ** (यानी हमारी कुदरत को पहचानने) **का सामान हो**(08) **और** (हमारी कुदरत का इससे भी पता चलता है कि) **हमने आसमान से बरकत वाला पानी बरसाया फिर उससे उगाए बाग़ और खेती का अनाज(09) और खजूर के ऊंचे-ऊंचे पेड़ जिनके गुफ्फे ख़ूब गुन्धे हुए होते हैं(10) बन्दों को रोज़ी देने के लिए और** (इस तरह) **हमने उस** (बारिश) **से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा किया,** (बस) **इसी तरह** (समझ लो कि मुर्दों का) **ज़मीन** (यानी क़ब्रों) **से निकलना होगा**(11) (और इनका झुटलाना कोई नई बात नहीं) **इन से पहले झुटला चुके हैं नूह की क़ौम और असहाबुर्रस्स और समूद(12) और आद और फ़िरऔन और क़ौमे लूत(13) और असहाबे ऐका और तुब्बा की क़ौम,** (यानी) **सब ने** (अपने-अपने) **पैग़म्बरों को झुटलाया था इसलिए मेरा अज़ाब से डराना सच होकर रहा** (कि उन सब पर अज़ाब आकर रहा इसी तरह इन झुटलाने वालों पर अज़ाब आएगा चाहे दुनिया में भी या सिर्फ़ आख़रत में)(14) **क्या हम पहली बार के पैदा करने में थक गये** (कि दोबारा ज़िन्दा न कर सकें) **बल्कि ये लोग नये सिरे से पैदा करने की तरफ़ से** (बे दलील) **शक में पड़े हुए हैं**(15)।

नोटः- हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ज्र की नमाज़ में अक्सर सूरत 'क़ाफ़' तिलावत फ़रमाते थे (यह सूरत ख़ासी बड़ी है) मगर इसके बावजूद नमाज़ हलकी रहती थी। (क़रतबी)

यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी तिलावत का ख़ास असर था कि बड़ी से बड़ी सूरत और लम्बी से लम्बी नमाज़ भी पढ़ने वालों पर हलकी रहती थी।

وَ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَ نَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚۖ وَ نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿١٦﴾ اِذْ يَتَلَقَّى
الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَ عَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ﴿١٧﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾ وَ جَآءَتْ سَكْرَةُ
الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾ وَ نُفِخَ فِى الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢٠﴾ وَ جَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ
مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّ شَهِيْدٌ ﴿٢١﴾ لَقَدْ كُنْتَ فِىْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿٢٢﴾ وَ قَالَ
قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَىَّ عَتِيْدٌ ؕ ﴿٢٣﴾ اَلْقِيَا فِىْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ۙ ﴿٢٤﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ۙ ﴿٢٥﴾ ۨالَّذِىْ
جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِى الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ﴿٢٦﴾ قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَ لٰكِنْ كَانَ فِىْ ضَلٰلٍ
بَعِيْدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَىَّ وَ قَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَىَّ وَ مَآ اَنَا بِظَلَّامٍ
لِّلْعَبِيْدِ ﴿٢٩﴾

आयत नं० 16 से 29

और (क़ियामत में मुर्दों के ज़िन्दा करने की कुदरत पर दलील के लिए कहते हैं कि) **हमने** (ही तो) **इन्सान को पैदा किया है और उसके जी में जो बातें आती रहती हैं हम उन** (तक) **को** (भी) **जानते हैं** (तो जो काम हाथ पैर और ज़बान से होते हैं उन का जानना तो और भी आसान है)**, और** (बल्कि) **हम** (तो) **उसके इतना नज़दीक हैं कि उसकी गर्दन की रग से भी ज़्यादा** (जिसके कटने से इन्सान मर जाता है इस लिए उसके हालात को अच्छी तरह जानते हैं)(16) **जब** (कामों को) **लिखने वाले दो फ़रिशते** (इन्सान के कामो को) **लिखते रहते हैं जो कि दाहिनी और बाईं तरफ़ बैठे रहते** (हैं और बराबर हर काम को लिखते रहते) **हैं**(17) (यहां तक कि) **वो कोई बोल मुंह से नहीं निकालने पाता मगर उसके पास ही एक पेहरेदार तैनात होता** (है अगर नेकी का काम हो तो दाहिने वाला लिखता है और बुराई का काम हो तो बाईं तरफ़ वाला लिखता) **है**(18) **और** (होशियार हो जाओ) **मौत की सख़्ती सचमुच** (नज़दीक) **आपहुंची** (यानी हर आदमी की मौत नज़दीक ही है)**, यह** (मौत) **वो चीज़ है जिससे तू बिदकता** (और भागता) **था**(19) **और** (क़ियामत के दिन दोबारा) **सूर फूंका जाएगा** (जिससे सब ज़िन्दा हो जाएंगे)**, यह वो दिन होगा जिस** (दिन के अज़ाब) **से** (लोगों को) **डराया जाता था**(20) **और हर आदमी** (क़ियामत के मैदान में) **इस तरह आएगा कि**

उसके साथ (दो फ़रिशते होंगे जिनमें) **एक** (तो क़ियामत के मैदान की तरफ़) **उसको अपने साथ लाएगा और एक** (उसके कामों का) **गवाह होगा(21)** (और उनमें जो काफ़िर होगा उससे कहा जाएगा कि) **तू इस दिन से अन्जान था** (यानी इसको न मानता था) **सो हम ने तुझ पर से तेरा पर्दा** (बेपरवाई और इनकार का) **हटा दिया** (और क़ियामत दिखा दी) **सो आज** (तो) **तेरी नज़र बड़ी तेज़ है** (कि देखने समझने में कोई रूकावट नहीं काश तू दुनिया में भी इस पर्दे को हटा देता तो तेरे दिन भले होते)(22) **और** (इसके बाद कामों को लिखने वाला) **फ़रिशता जो उसके साथ रहता था कहेगा कि यह वो** (आमालनामा) **है जो मेरे पास तैयार है**(23) (हुक्म दिया जाएगा कि) **हर ऐसे आदमी को दोज़ख़ में डाल दो जो कुफ़्र करने वाला हो और** (सच्चे दीन से) **ज़िद रखता हो**(24) (और) **नेक काम से रोकता हो** (और बन्दगी की) **हद से बाहर हो जाने वाला हो** (और दीन में) **शक पैदा करने वाला हो**(25) **जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद बना रक्खा हो ऐसे आदमी को सख़्त अज़ाब में डाल दो**(26) (उस वक़्त काफ़िर अपने बचाव के लिए गुमराह करने वालो पर इल्ज़ाम रखेंगे तो) **वो शैतान जो उसके साथ रहता था कहेगा कि या रब हमारे मैंने इसको** (जबरन) **गुमराह नहीं किया था लेकिन** (बात यह है कि) **यह ख़ुद ही परले दर्जे की गुमराही में पड़ा हुआ था** (मैंने बहकाया ज़रूर था मगर ज़बरदस्ती नहीं की थी)(27) **कहा जाएगा मेरे सामने झगड़े की बातें मत करो** (कि बेफ़ाइदा हैं) **और मैं तो पहले ही तुम्हारे पास अज़ाब की धमकी भेज चुका था** (कि जो कुफ़्र के काम करेगा चाहे ख़ुद या किसी के बहकाने से सब को उनकी ग़लतियों के हिसाब से जहन्नम की सज़ा दूंगा)(28) **मेरे यहां** (वो) **बात** (सज़ा की धमकी की) **बदली नहीं जाएगी** (बल्कि तुम सब दोज़ख़ में झोंके जाओगे) **और मैं** (इस फ़ैसले में) **बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं हूं** (बल्कि बन्दों ने ख़ुद ऐसे ग़लत काम किये जिसकी सज़ा आज भुगत रहे हैं)(29)

नोटः- एक हदीस में है कि इन्सान कभी-कभी कोई भलाई की बात बोलता है जिससे अल्लाह तआ़ला राज़ी होता है मगर यह उसको मामूली बात समझ कर बोलता है उस को पता भी नहीं होता कि उसका सवाब कहां तक पहुंचा कि अल्लाह तआ़ला उसके लिए अपना सदा का राज़ी नामा क़ियामत तक के लिए लिख देते हैं। इसी तरह इन्सान कोई बात अल्लाह की नाराज़ी की (मामूली समझ कर) ज़बान से निकाल देता है उसको गुमान भी नहीं होता कि उसका गुनाह व वबाल कहां तक पहुंचेगा। अल्लाह उसकी वजह से अपनी सदा की नाराज़ी क़ियामत तक के लिए लिख

देते हैं। (इब्ने कसीर)

हज़रत अक्लमा रह० कहते हैं कि इस हदीस ने मुझे बहुत सी बातें ज़बान से निकालने से रोक दिया है। (इब्ने कसीर)

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَ تَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ۝ وَ اُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ۝ هٰذَا مَا
تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ۝ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَ جَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ۝ ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ
الْخُلُوْدِ ۝ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَ لَدَيْنَا مَزِيْدٌ ۝

आयत नं० 30 से 35

(और वो दिन लोगों को याद दिलाइये) **जिस दिन कि हम** (काफ़िरों को) **दोज़ख़** (में दाख़िल करने के बाद उस) **से कहेंगे कि तू भर गई और वो कहेगी कुछ और भी है** (यह पूछना शायद काफ़िरों को और ज़्यादा डराने के लिए हो)(30) **और जन्नत** (का बयान यह है कि वो) **परहेज़गारों के नज़दीक कर दी जाएगी कि कुछ** (भी) **दूर न रहेगी**(31) (और परहेज़गारों से कहा जाएगा कि) **यह वो चीज़ है जिसका तुम से** (यह) **वादा किया जाता था कि वो हर ऐसे आदमी के लिए है जो** (अल्लाह की तरफ़ दिल से) **लौ लगाने वाला** (और नेक कामों की) **पाबन्दी करने वाला हो**(32) (मतलब यह कि) **जो अल्लाह से बेदेखे डरता हो और ध्यान लगाने वाला दिल लेकर** (अल्लाह के पास) **आएगा**(33) (उन को हुक्म होगा कि) **इस जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ, यह दिन है सदा रहने** (के लिए हुक्म होने) **का**(34) **उन को जन्नत में सब कुछ मिलेगा जो चाहेंगे और हमारे पास** (उन की चाही हुई चीज़ों से) **और भी ज़्यादा** (नेमत है कि वहां तक जन्नती का ध्यान भी न पहुंचेगा जैसा कि हदीस में है कि जन्नत की नेमतें ऐसी हैं जिन को न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न किसी इन्सान के दिल में उस का ध्यान आया उन नेमतों में से एक नेमत अल्लाह तआ़ला का दीदार) **है**(35)।

नोटः- हज़रत अबूहुरैराह रज़ि० की एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "जो आदमी शुरू दिन में चार रकअतें (इशराक की) पढ़ले वो अव्वाब (लौ लगाने वाला) और हफ़ीज़ (नेक कामों की पाबन्दी करने वाला) है। (क़ुरतबी)

وَ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِى الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ۝٣٦ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ
لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَ هُوَ شَهِيْدٌ ۝٣٧ وَ لَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَيْنَهُمَا فِىْ
سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖۗ وَّ مَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ۝٣٨ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ قَبْلَ
الْغُرُوْبِ ۝٣٩ؕ وَ مِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَ اَدْبَارَ السُّجُوْدِ ۝٤٠

आयत नं० 36 से 40

और हम इन (मक्के वालों) **से पहले बहुत सी उम्मतों को** (कुफ़्र की सज़ा में) **हलाक कर चुके हैं जो ताक़त में इन से** (कहीं) **ज़्यादा थे और** (दुनिया का सामान बढ़ाने के लिए) **सारे शहरों को छानते फिरते** (थे यानी ताक़त के साथ रोज़गार में भी बड़ी तरक़्क़ी किये हुए) **थे,** (लेकिन जब हमारा अज़ाब आया तो उनको) **कहीं भागने की जगह भी न मिली** (यानी किसी तरह बच न सके)(36) **इस** (क़िस्से) **में उस आदमी के लिए बड़ी नसीहत का सामान है जिसके पास** (समझने वाला) **दिल हो या** (कम से कम यह हो कि) **वो** (दिल से) **ध्यान करके बात सुन लेता** (हो और सुनने के बाद उस बात को मान लेता) **हो(37) और** (ऐ क़ियामत का इनकार करने वालो हमारी कुदरत ऐसी है कि) **हमने आसमानों को और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच में है उस सब को छः** (6) **दिन** (के बराबर वक़्त) **में पैदा किया और हम को कुछ थकन न हुई** (फिर इन्सान को दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है)(38) **सो** (ऐ पैग़म्बर) **इन की बातों पर सब्र कीजिए** (यानी इनकार पर ग़म न कीजिए) **और** (ग़म बान्टने के लिए) **अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते रहिए** (इसमें नमाज़ भी दाख़िल है) **सूरज निकलने से पहले** (जैसे फ़ज्र की नमाज़) **और** (सूरज) **छुपने से पहले** (जैसे ज़ुहर व अस्र की नमाज़)(39) **और रात में भी उसकी तस्बीह किया कीजिए** (इसमें मग़रिब व इशा की नमाज़ें आ गईं) **और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद भी** (इसमें नफ़्लें और ज़िक्र आगये मतलब यह हुआ कि अल्लाह के ज़िक्र में और उसकी फ़िक्र में लगे रहिए ताकि उन की कुफ़्र की बातों की तरफ़ ध्यान ही न हो)(40)

नोटः- एक हदीस में है कि ''जो आदमी हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद 33 बार सुबहानल्लाह 33 बार अल्हम्दुलिल्लाह, 33 बार अल्लाहु अकबर और एक बार ''लाइलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर'' पढ़ लिया करे तो उसकी ख़ताएं मुआफ़ कर दी जाएंगी चाहे वो दरिया की लहरों के बराबर हों''। (बुख़ारी व मुस्लिम)

وَ اسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٤١﴾ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٢﴾ اِنَّا
نَحْنُ نُحْيٖ وَ نُمِيْتُ وَ اِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ﴿٤٤﴾ نَحْنُ
اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۚ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾

आयत नं० 41 से 45

और (ऐ लोगो इस बात को ध्यान से) **सुनो** (कि) **जिस दिन एक पुकारने वाला फ़रिशता** (यानी इसराफ़ील अलैहिस्सलाम सूर की आवाज़ से मुर्दों को क़ब्र से निकालने के लिए) **पास ही से पुकारेगा** (पास का मतलब यह है कि वो आवाज़ सब को ऐसे पहुंचेगी जैसे कोई पास से पुकार रहा है)(41) **जिस दिन उस आवाज़ को सचमुच सब सुन लेंगे, यह दिन होगा** (क़ब्रों से) **निकलने का**(42) **हम ही** (अब भी) **ज़िन्दगी देते हैं और हम ही मौत भी** (देते हैं) **और हमारी तरफ़ फिर लौट कर आना है**(43) **जिस दिन ज़मीन उन** (मुर्दों) **पर से खुल जाएगी जब कि वो** (निकल कर क़ियामत के मैदान की तरफ़) **दौड़ते होंगे, यह जमा कर लेना हमारे लिए आसान है**(44) **जो कुछ ये लोग** (क़ियामत के बारे में) **कह रहे हैं हम ख़ूब जानते हैं** (हम ख़ुद समझ लेंगे आप ग़म न करें) **और आप उन पर** (अल्लाह की तरफ़ से) **ज़बरदस्ती करने वाले** (बनाकर) **नहीं** (भेजे गये) **हैं** (बल्कि सिर्फ़ अज़ाब से डराने वाले और दीन की बात पहुंचाने वाले हैं जब यह बात है) **तो आप क़ुरआन के वास्ते से** (सब को और ख़ास कर) **ऐसे आदमी को नसीहत करते रहिए जो मेरी धमकी** (अज़ाब की) **से** (डरता हो मतलब यह कि बात सब को पहुंचाई जाएगी मगर नसीहत वो ही लेता है जो अल्लाह के अज़ाब से) **डरता हो**(45)।

नोटः- हज़रत क़तादा रह० इस आयत को पढ़ कर यह दुआ मांगते थे या अल्लाह हमें उन लोगों में दाख़िल कर दीजिए जो आप के अज़ाब की धमकी से डरते हैं और आप के वादे के उम्मीदवार हैं या वादा पूरा करने वाले या रहमत वाले।

51-सूरत-ज़ारियात

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '60' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۙ﴿۱﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۙ﴿۲﴾ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ۙ﴿۳﴾ فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۙ﴿۴﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ۙ﴿۵﴾ وَّ
اِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ؕ﴿۶﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۙ﴿۷﴾ اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۙ﴿۸﴾ يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ؕ﴿۹﴾ قُتِلَ
الْخَرّٰصُوْنَ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ۙ﴿۱۱﴾ يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ؕ﴿۱۲﴾ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ﴿۱۳﴾
ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۱۴﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ﴿۱۵﴾ اٰخِذِيْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمْ
رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ؕ﴿۱۶﴾ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ
يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَفِيْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿۱۹﴾ وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ۙ﴿۲۰﴾ وَفِيْۤ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا
تُبْصِرُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿۲۲﴾ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَاۤ اَنَّكُمْ
تَنْطِقُوْنَ ﴿۲۳﴾ ع

आयत नं० 01 से 23

क़सम है हवाओं की जो धूल उड़ाती हैं(01) फिर उन बादलों की जो (बारिश का) **बोझ उठाते हैं(02) फिर उन कशतियों की जो नर्मी से चलती हैं(03) फिर उन फ़रिशतों की जो** (हुक्म के हिसाब से दुनिया में) **चीज़ें बांटते** (हैं जैसा कि जहां जितनी बारिश का हुक्म होता है बादलों से उतना ही पहुंचाते हैं जिससे पैदावार होती है, मां के पेट में बच्चे की सूरत नर व मादा पूछ कर बनाते) **हैं(04)** (आगे इन सब क़समों का जवाब है कि) **तुम से जिस** (क़ियामत) **का वादा किया जाता है वो बिल्कुल सच है(05) और बेशक इन्साफ़ ज़रूर होने वाला है(06) क़सम है आसमान की जिसमें** (फ़रिशतों के चलने के) **रास्ते हैं(07) कि तुम** (सब) **लोग** (क़ियामत के बारे में) **अलग-अलग** (राय रखते) **हो** (कोई तस्दीक़ करता है कोई झुटलाता है)**(08) इस** (क़ियामत और उसके फ़ैसले के यक़ीन) **से वो ही** (बदनसीब) **मुंह फेरता है जिसको** (कामयाबी ही से) **फिरना होता**

है(09) **बर्बाद हो जाएं बेसनद बातें करने वाले** (यानी जो क़ियामत का बेदलील इनकार करते हैं)(10) **जो कि जहालत** (और बेपरवाई) **में** (सब कुछ) **भुला बैठे हैं**(11) (और हंसी उड़ाते हुए जल्दी मचाते हुए) **पूछते हैं कि इन्साफ़ का दिन कब होगा**(12) (आगे जवाब है कि वो उस दिन होगा) **जिस दिन** (कि) **वो लोग आग पर तपाए जाएंगे**(13) (और कहा जाएगा कि) **अपनी** (शरारतों की) **सज़ा का मज़ा चक्खो, ये ही है जिसकी तुम जल्दी मचाया करते थे**(14) (आगे ईमान वालो और तस्दीक़ करने वालों के सवाब का ज़िक्र है कि) **बेशक परहेज़गार लोग** (जन्नत के) **बाग़ों और नहरों में होंगे**(15) (और) **उनके रब ने उनको जो** (सवाब) **दिया होगा वो उसको** (ख़ुशी-ख़ुशी) **ले रहे होंगे,** (और क्यों न हो) **वो लोग इससे पहले** (यानी दुनिया में) **नेक काम करने वाले थे**(16) **वो लोग** (फ़र्ज़ व वाजिब अदा करने के साथ-साथ नफ़्लों की भी पाबन्दी करते थे जैसा कि) **रात के वक़्त बहुत कम सोते** (थे यानी रातों में जाग कर इबादत करते) **थे**(17) **और** (इसके बावजूद अपनी इबादत पर नज़र न करते थे बल्कि) **अख़ीर रात में** (अपने को इबादत में कमी करने वाला समझ कर) **मुआफ़ी मांगते थे**(18) **और** (माली इबादत का यह हाल था कि) **उनके मालों में मांगने वालों और न मांगने वालों** (यानी सभी ग़रीबों) **का हक़** (था यह ख़ैरात ज़कात के अलावा है और बिना अहसान जिताए ऐसी पाबन्दी से देते थे जैसे यह उन पर वाजिब) **था**(19) **और यक़ीन लाने** (की कोशिश करने और चाहत रखने) **वालों के लिए** (क़ियामत के सबूत के लिए) **ज़मीन में बहुत सी निशानियां** (और दलीलें) **हैं**(20) **और ख़ुद तुम्हारे अपने वजूद में भी** (दलीलें मौजूद हैं), **तो क्या तुम को** (फिर भी) **दिखाई नहीं देता** (यानी क्या फिर भी नहीं समझते)(21) **और तुम्हारी रोज़ी और जो तुम से** (क़ियामत के बारे में) **वादा किया जाता है** (उन) **सब** (का तय वक़्त) **आसमान** (में तक़दीर की किताब) **में** (लिखा हुआ) **है** (जिस तरह रोज़ी कब मिलेगी मालूम नहीं मगर जो नसीब में है मिलेगी ज़रूर इसी तरह क़ियामत के आने के वक़्त का पता न होने का मतलब यह नहीं कि नहीं आएगी बल्कि ज़रूर आएगी)(22) **तो क़सम है आसमान और ज़मीन के रब की कि वो** (फ़ैसले का दिन) **सच है** (और ऐसा यक़ीनी) **जैसा तुम बातें कर रहे हो** (कभी इसमें शक नहीं होता इसी तरह इसको यक़ीनी समझो)(23)।

नोटः- एक हदीस में है कि कोई आदमी (नसीब में लिखी) अपनी तय रोज़ी से बचने और भागने की भी कोशिश करे तो रोज़ी उसके पीछे-पीछे भागेगी। जैसे इन्सान मौत से भाग नहीं सकता ऐसे ही रोज़ी से भी भाग नहीं सकता । (क़ुरतबी)

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٤﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٢٥﴾
فَرَاغَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ﴿٢٦﴾ فَقَرَّبَهٗۤ اِلَيْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا
تَخَفْ ؕ وَ بَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَ قَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ﴿٢٩﴾ قَالُوْا
كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٠﴾

आयत नं० 24 से 30

(ऐ पग़म्बर) **क्या इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **के इज़्ज़तदार महमानों का क़िस्सा आप तक पहुंचा है(24) जब कि वो** (महमान) **उनके पास आए फिर उनको सलाम किया, इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने भी** (जवाब में) **कहा सलाम,** (और दिल में सोचा कि) **अन्जान लोग** (मालूम होते) **हैं(25) फिर चुपके से अपने घर वालों के पास गये और तन्दरूस्त बछड़ा** (यानी उस का तला हुआ गोश्त) **लाए(26)** (और) **उसको उन के पास** (यानी सामने) **लाकर रक्खा** (चूकि वो फ़रिशते थे क्यों खाते उस वक़्त इब्राहीम अलैहिस्सलाम को शक हुआ और) **कहने लगे कि आप लोग खाते क्यों नहीं(27)** (जब फिर भी न खाया) **तो उनसे दिल में डरे** (कि ये लोग कहीं मुख़ालिफ़ों और दुशमनों में से न हों)**, उन्होंने कहा कि तुम डरो नहीं** (हम आदमी नहीं फ़रिशते हैं)**, और** (यह कह कर) **उन को एक बेटे की ख़ुशख़बरी दी जो बड़ा आलिम** (यानी नबी) **होगा** (क्योंकि मख़लूक़ में सबसे ज़्यादा इल्म नबियों को होता है मुराद इससे इसहाक़ अलैहिस्सलाम हैं)**(28) इतने में उन की बीवी** (हज़रत सारा जो कहीं खड़ी सुन रहीं थी औलाद की ख़बर सुन कर) **ज़ोर से बोलती आईं फिर** (जब फ़रिशतों ने उनको भी यह ख़बर सुनाई तो अचम्भे से) **माथे पर हाथ मारा और कहने लगीं कि** (एक तो में) **बुढ़िया** (फिर) **बांझ** (इस वक़्त बच्चा पैदा होना भी अचम्भे की बात है)**(29) फ़रिशते कहने लगे कि** (अचम्भा मत करो) **तुम्हारे रब ने ऐसा ही कहा है,** (और) **कुछ शक नहीं कि वो बड़ा हिकमत वाला बड़ा जानने वाला है** (यानी भले ही यह बात अचम्भे की है मगर तुम तो पैग़म्बर के घर में रहती हो और समझदार हो यह जान कर कि अल्लाह का हुक्म है अचम्भा न होना चाहिए)**(30)**

नोटः- बच्चा होने की ख़ुशख़बरी के बाद जब हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम पैदा हुए उस वक़्त उनकी मां हज़रत सारा की उम्र 99 साल और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र 100 साल की थी। (क़रतबी)